



पृष्ठ 8- मूल्य 1/-

**BOOK!
NOW!**

**Harsh
Media**
ADVERTISERS

**अब हर नज़र
आपके Brand पर !**

- Unipole / Hoarding
- Outdoor LED Screen
- Digital LED Television
- Train Wrap Branding
- Mobile LED Vehicle
- Social media advt.
- News Paper advt.
- Branding consultancy

8253029444 | 8435918888

www.harshmediaadvertisers.com

info.harshmedia@gmail.com

[harsh_media_advertisers](https://www.instagram.com/harsh_media_advertisers)

संपादकीय

अरुणाचल पर चीन की कुदृष्टि

आईटीबीपी डीजी के बयानों से सियासत गरमाई

ब्रिक्स समेत कई अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर लगातार मैत्री की बात करने वाले चीन द्वारा एलएसी पर तनाव पैदा करने की खबरें चिंता बढ़ाने वाली हैं। अरुणाचल बॉर्डर पर भारत व चीन के आमने-सामने होने की खबरों के सामने आने के बाद इस मुद्दे पर सियासत भी तेज हो गई है। दरअसल, भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने गुरुवार को एक कार्यक्रम में कहा कि पिछले कुछ समय से अरुणाचल प्रदेश में आईटीबीपी के जवान व पीएलए के सैनिक आमने-सामने आए हैं। यह स्थिति बदली नहीं है। उनके इस बयान के बाद कांग्रेस व विपक्ष ने केंद्र सरकार को घेरना शुरू कर दिया है। विपक्ष द्वारा इस मुद्दे को लेकर सरकार की चुप्पी पर सवाल उठाये जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि इस वर्ष जुलाई में उत्तर-पूर्वी सीमा पर तनाव शुरू होने के उपरांत पहली बार आधिकारिक रूप से इसकी पुष्टि हुई है। बताते हैं कि अरुणाचल प्रदेश में सुबनसिरी जिले के असाफिला और माजा इलाके में यह तनाव बना हुआ है। वहीं सीमा पर तनाव के खुलासे और विपक्षी हमलों के बाद विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता द्वारा कहा गया है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा से जुड़े विवादों को सुलझाने के लिये दोनों देश लगातार प्रयासरत हैं।

“ कहा जा रहा है कि इस वर्ष जुलाई में उत्तर-पूर्वी सीमा पर तनाव शुरू होने के उपरांत पहली बार आधिकारिक रूप से इसकी पुष्टि हुई है। बताते हैं कि अरुणाचल प्रदेश में सुबनसिरी जिले के असाफिला और माजा इलाके में यह तनाव बना हुआ है। वहीं सीमा पर तनाव के खुलासे और विपक्षी हमलों के बाद विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता द्वारा कहा गया है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा से जुड़े विवादों को सुलझाने के लिये दोनों देश लगातार प्रयासरत हैं। **”**

लिये चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत भी आ चुके हैं। यहीं वजह है कि कांग्रेस आरोप लगा रहा है कि जुलाई से सीमा पर तनाव होने की खबरों को देश से छिपाया गया है।

निस्संदेह, भारत व चीन के बीच साढ़े तीन हजार किलोमीटर लंबी सीमा से जुड़े विवादों को लेकर देश चिंतित रहा है। भारतीयों के दिलों में 1962 के चीनी हमले के जख्म अभी भरे नहीं हैं। ‘मुंह में राम और बगल में छुटी’ की चीन की नीति पर भरोसा करना संभव भी नहीं है। हाल के वर्षों में गलवान का छल देवायसियों को याद है, जब हमने अपने बीस वीर जवानों को खोया था। वहीं भारत तिब्बत सीमा पुलिस के डीजी शत्रुजीत कपूर ने वार्षिक हिमवारि सम्मान समारोह के दौरान कहा था कि अरुणाचल सीमा पर तनाव के दौरान आईटीबीपी के कमांडो मुस्तेद रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारी नई गठित शौर्य कमांडो टीमों ने इस दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजस्थान के अलवर स्थित सेंट्रल ट्रेनिंग कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में कपूर ने चीन की उन्नत सैन्य तकनीकों के मुकाबले के लिये आधुनिक हथियारों की जरूरत भी बतायी। उन्होंने स्वीकार किया कि पारंपरिक हथियारों व तरीकों से चीन का मुकाबला करना मुश्किल होगा। चीन ने बुनियादी ढांचे और हथियारों के आधुनिकीकरण में भारी निवेश किया है। आईटीबीपी के डीजी ने आधुनिक युद्धों के तौर -तरीकों में आ रहे बदलावों का जिक्र करते हुए कहा कि आज ड्योन जैसी तकनीक से छोटे देश भी बड़े देशों का मुकाबला कर रहे हैं। उन्होंने ईरान द्वारा अमेरिका का मुकाबला करने तथा यूक्रेन द्वारा रूस को पहुंचाये जा रहे बड़े नुकसान का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि आईटीबीपी के आधुनिकीकरण के लिये चार हजार करोड़ का बजट बनाया गया है। जिसमें से एक हजार करोड़ रुपये ड्योन शक्ति बढ़ाने पर खर्च किए जाएंगे। जिसमें एंटी ड्योन सिस्टम मजबूत करना भी शामिल हैं। जिसके लिए ड्योन प्लाटून बनायी गई हैं। वहीं ड्योन पायलटों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। साथ ही अपने ड्योन खुद बनाने पर काम चल रहा है। इसके अलावा भूमिगत शेल्टर बनाने पर भी जोर दिया जा रहा है। आने वाले समय में भूमिगत ढांचे स्थायी सुरक्षा व्यवस्था का हिस्से होंगे। निस्संदेह, भविष्य में गलवान जैसा संघर्ष सामने न आए, उसके लिये अभी से तैयारी करने की जरूरत है।

डॉ. संजय वर्मा

डिजिटल होती जा रही अर्थव्यवस्था में किसी साधारण सलाह की मुश्किल यह है कि उसे बेचना मुश्किल है। ‘रोजाना कुछ देर पैदल चलिए’ के आह्वान में कोई सब्सक्रिप्शन नहीं है। ऐप नहीं हैं। इन्फ्लुएंसर नहीं हैं। पेड प्रोग्राम और प्रमोशन नहीं हैं। और एक दिन में खुद को बदल डालने की सलाह देने वाले चैलेंज नहीं हैं। लेकिन इसी क्रिया को कोई आकर्षक नाम मिल जाए तो उसके प्रति दीवानगी पैदा की जा सकती है।

मनुष्य हजारों वर्षों से पैदल चलता आया है। तीर्थयात्री चले, किसान चले, बौद्ध भिक्षु चले, गांधी और आंदोलनकारी चले। सुबह-सबरे हमारे माता-पिता, चाचा-ताऊ, सबने पैदल चलकर अनंत दूरियां नापी हैं। हर सभ्यता ने पैदल चलने में शरीर के साथ मन को भी गति दी है। लेकिन इधर सोशल मीडिया यानी डिजिटल संसार में एक नई चाल सरपट दौड़ रही है। इंस्टाग्राम, फेसबुक और यूट्यूब पर अचानक ‘ताई-चाई वॉकिंग’ का ट्रेंड जंगल में आग की तरह फैल गया है।

डिजिटल स्क्रीनों पर कहीं धीमे कदम बढ़ाते बुजुर्ग दिखते हैं, तो कहीं आकर्षक देहयष्टि वाले ट्रेनर। कुछेक जगहों पर इसके विज्ञापनों में एम्प्लेएंसर इस चाल को वजन घटाने, पेट की चर्बी कम करने और बढ़ती उम्र को मात देने वाला करिश्माई तरीका बताकर बेच रहे हैं। हमारे देश में भी खासकर प्रौढ़ और साठ पार की उम्र वाले लोगों के बीच इस चाल को लेकर दिलचस्पी बढ़ गई है। हाल में, सेहत के अंतरराष्ट्रीय जर्नल हार्वर्ड हेल्थ ने ‘ताई-चाई वॉकिंग: व्हाट इज़ इट डॉड इट क्व’ शीर्षक से इस पर विस्तृत लेख छापकर और सनसनी फैला दी है। सवाल दिलचस्प है कि क्या दुनिया

ने पैदल चलने का हकीकत में कोई नया तरीका खोज निकाला है या फिर सदियों पुरानी आदत पर सोशल मीडिया-प्रेरित बाजार ने एक नया लेबल चिपका दिया है।

यूं ताई-चाई वॉकिंग का अपना एक इतिहास और प्रतिष्ठा है। यह चीन की सदियों पुरानी मार्शल आर्ट और माईड-बॉडी की परंपरा में आने वाली एक शारीरिक गतिविधि है। इसमें शरीर की धीमी, नियंत्रित गति, संतुलन, श्वास और सजगता का महत्त्व है। हार्वर्ड हेल्थ के मुताबिक, ताई-चाई वॉकिंग मूलतः पैदल चाल (फुट वॉक) को उसके सरलतम रूप में अपनाती है। सामान्य पैदल चाल में शरीर का मोमेंटम (गति) हमें आगे बढ़ाता है, जबकि ताई-चाई वॉकिंग में कदम जानबूझकर धीमे किए जाते हैं। पहले पैर आगे बढ़ाया जाता है, फिर शरीर का भार आहिस्ता से उस पैर पर स्थानांतरित किया जाता है। इसके बाद दूसरा पैर आगे बढ़ाते हुए यही प्रक्रिया दोहराई जाती है। इससे व्यक्ति अपने गुरुत्वीय केंद्र (सेंटर ऑफ ग्रेविटी), जमीन से पैरों के स्पर्श और शरीर के संतुलन के प्रति अधिक सजग होता है। अर्थात् यह केवल ‘धीरे चलना’ नहीं है, बल्कि इसके बायोमैकेनिक्स वास्तव में सामान्य पैदल चाल से कुछ अलग हैं।

अध्ययनों में ताई-चाई वॉकिंग के दौरान सामान्य चाल की तुलना में घुटने और कूल्हे की गति, मांसपेशियों के संचालन और वजन के स्थानांतरण के अलग-अलग स्तर पाए गए हैं। पाया गया कि ताई-चाई वॉकिंग के दौरान व्यक्ति धीमी गति से पैदल चलता है और शरीर के भार को अधिक नियंत्रित तरीके से



स्थानांतरित करता है। इसलिए इसे विशुद्ध ‘मार्केटिंग फ्रॉड’ कहना उतना ही गलत होगा, जितना इसे चमत्कारी व्यायाम मान लेना।

ताई-चाई वॉकिंग के फायदों को लेकर साल 2024 में 18 क्लिनिकल ट्रायल्स का विवरण मिलता है, जिनमें 65 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के शारीरिक संतुलन और सेहत में कुल मिलाकर सुधार अंकित किया गया था। इसी तरह के एक अन्य मेटा-विश्लेषण में 2,000 लोगों पर किए गए 28 परीक्षणों में पैदल चलने पर बेहतर संतुलन की बात सामने आई थी। लेकिन यहां एक अंतर है, जिसे सोशल मीडिया अक्सर गायब कर देता है। ताई-चाई पर उपलब्ध प्रमाण और सोशल मीडिया पर वायरल ‘ताई-चाई वॉकिंग’ कार्यक्रमों के प्रमाण एक ही चीज नहीं हैं। इस बारे में हार्वर्ड हेल्थ ने भी चेतावनी दी है कि ताई-चाई वॉकिंग को बहुत तेजी से वजन घटाने या असाधारण

विचार

भारत की कृषि गाथा का नया रूप परिवर्तन का एक दशक



जलवायु अनकूलन पर बढ़ते ध्यान से प्रेरित अधिक विविधीकृत, प्रौद्योगिकी-सक्षम और सुदृढ़ कृष प्रणाली के उभार का संकेत देता है। कृषि विकास की औसत दर 1967-1995 के दौरान लगभग 2.7 प्रतिशत और 1996-2014 के दौरान लगभग 3.0 प्रतिशत थी। यह 2015-2025 के दौरान बढ़कर लगभग 4.5 प्रतिशत हो गई (खाद्यान्न उत्पादन में 8.4 मिलियन टन प्रतिवर्ष, फल एवं सब्जियों में 7.6 मिलियन टन प्रतिवर्ष तथा दूध में भी अच्छी वृद्धि दर्ज की गई। पिछले दो वर्षों में खाद्यान्न उत्पादन में असाधारण वृद्धि दर्ज की गई, जो प्रति वर्ष 22.1 मिलियन टन रही और पिछले वर्षों की तुलना में बहुत अधिक है। यह उपलब्धि केंद्र और राज्यों के बीच बेहतर समन्वय, कार्यक्रमों के प्रभावी संयोजन, जलवायु-अनुकूल प्रौद्योगिकियों के अंगीकरण, लक्षित निवेश और किसानों को बढ़े हुए समर्थन के संयुक्त प्रभाव को दर्शाती है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह वृद्धि अब व्यापक आधार पर हो रही है और इसे केवल अनाज ही नहीं, बल्कि बागवानी, डेयरी, मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन तथा अन्य उच्च-मूल्य वाले कार्यक्रमों से भी बल मिल रहा है। यही कृषि भारत के विकास के अगले चरण की गति देगी।

हमारा उद्देश्य अब केवल अधिक उत्पादन तक सीमित नहीं होना चाहिए। हमें कम संसाधनों—कम पानी, कम भूमि, कम ऊर्जा और अनावश्यक कृषि आदानों के कम उपयोग—के साथ अधिक उत्पादन करना होगा, साथ ही बेहतर गुणवत्ता वाला, सुरक्षित और अधिक पौष्टिक खाद्य तैयार करना होगा। भारत में उपभोग के बदलते स्वरूप से भी इसका स्पष्ट संकेत मिलता है। ग्रामीण भारत में 1972-73 में खाद्य व्यय का लगभग 57 प्रतिशत हिस्सा अनाज पर खर्च होता था; 2022-23 तक यह घटकर लगभग 11 प्रतिशत रह गया। इसी अवधि में दूध और दूध उत्पादों, फलों, सब्जियों, अंडों, मांस और मछली का हिस्सा लगभग 20 प्रतिशत से बढ़कर करीब 48 प्रतिशत हो गया। शहरी क्षेत्रों में भी उपभोग का रझान इसी तरह बदला है। हमारी कृषि को इस नए भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप ढलना होगा। इसका अर्थ है दलहनों तिलहनों, फलों, सब्जियों, डेयरी, मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन और अन्य उच्च-मूल्य वाली कृषि उपज पर अधिक ध्यान देना। इसका अर्थ खाद्य सुरक्षा की सीमित अवधारणा से आगे बढ़कर पोषण सुरक्षा की दिशा में बढ़ना भी है। किसानों को उन मूल्य श्रृंखलाओं से जोड़ना आवश्यक है, जहां वास्तविक आर्थिक अवसर तेजी से ग्रेटिंग, प्रसंस्करण, पैकेजिंग, ब्रांडिंग, लॉजिस्टिक्स और निर्यात में केंद्रित हो रहे हैं।

किसान-केंद्रित विकास की व्यवस्था तैयार करना

भारत सरकार ने इस बदलाव के लिए महत्वपूर्ण आधार तैयार किया है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना जल के कुशल उपयोग को बढ़ावा दे रही है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड पहल ने मिट्टी की जांच और संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन को कृषि संबंधी निर्णयों के केंद्र में रखा है। पीएम-कुसुम कृषि को नवीकरणीय ऊर्जा से जोड़ रही है। किसान उत्पादक

संगठन (एफपीओ) सामूहिक उपज-संग्रह और सौदेबाजी की क्षमता को सुदृढ़ कर रहे हैं। ई-नाम कृषि बाजारों को डिजिटल रूप से जोड़ रहा है, जबकि कृषि अवसंरचना कोष, प्रधानमंत्री किसान संपदा योजना और पीएमएफएमई फसल कटाई के बाद की अवसंरचना और प्रसंस्करण को मजबूत कर रहे हैं। अब इन पहलों को बीज से मिट्टी तक, खेत से बाजार तक और प्रयोगशाला से आजीविका तक एकीकृत किसान-केंद्रित मूल्य श्रृंखला में समाहित करना होगा। इस परिवर्तन में प्रौद्योगिकी की भूमिका केंद्रीय होगी। भारतीय कृषि अनुसंधान अब केवल उपज बढ़ाने के पारंपरिक उद्देश्य तक सीमित नहीं है। वर्ष 2014 से 2025 के बीच फसलों की 3,236 किस्में जारी की गईं, जबकि 2003 से 2014 के दौरान यह संख्या 1,540 थी। हाल के वर्षों में जारी की गई किस्मों के बड़े हिस्से को जलवायु के प्रति अधिक सहिष्णु बनाने पर ध्यान दिया गया है और जैव-सुदृढ़ीकरण पर भी अधिक जोर दिया जा रहा है। इसलिए अगली कृषि क्रांति उत्कृष्टता, लचीलेपन और ज्ञान की क्रांति होनी चाहिए। कुत्रिम बुद्धिमत्ता, रिमोट सेंसिंग, ड्रोन, जीनोमिक्स, जैव-प्रौद्योगिकी, डिजिटल परामर्श प्रणालियां और भू-स्थानिक प्रौद्योगिकियां किसानों को बुवाई, सिंचाई, पोषक तत्वों, कीटों, मौसम और बाजारों के बारे में बेहतर निर्णय लेने में मदद कर सकती हैं। डिजिटल कृषि पहल, एग्रीस्टैक और eआई-सक्षम परामर्श मंच कृषि सेवाओं को अधिक लक्षित और सुलभ बना सकते हैं। हालांकि, प्रौद्योगिकी तभी परिणाम देगी, जब वह किसान तक सरल, किफायती और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप पहुंचेगी।

प्रयोगशाला से अंतिम मील तक

अनुसंधान और कृषि विस्तार की भूमिका इसलिए और भी महत्वपूर्ण हो गई है। कृषि अनुसंधान में निवेश किया गया प्रत्येक रुपया पर्याप्त आर्थिक लाभ उत्पन्न करता है, जबकि कृषि विस्तार वैज्ञानिक ज्ञान को खेतों में व्यावहारिक सुधारों में बदलता है। हमें अपनी प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों, स्टार्टअप, निजी नवप्रवर्तकों और किसानों के बीच संबंध सुदृढ़ करने होंगे। इसके साथ ही हमें संसाधनों से जुड़ी चुनौती का भी सामना करना होगा। भारत जल, उर्वरक, ऊर्जा और भूमि के उपयोग को लगातार बढ़ाकर कृषि उत्पादन का विस्तार नहीं कर सकता। भूजल का क्षरण, मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट, जलवायु में अस्थिरता और चरम मौसमी घटनाएं एक नए उत्पादन प्रतिमान की मांग करती हैं। साक्ष्य दर्शाते हैं कि कृषि विकास के हाल के चरण में अधिक उत्पादकता के साथ अधिक स्थिरता भी आई है। इससे विविधीकरण, संसाधनों के कुशल उपयोग, जोखिम प्रबंधन और जलवायु-सहनशीलता का बढ़ता महत्व स्पष्ट होता है। इसीलिए स्थिरता कोई विपर्ययणीय विलासिता नहीं, बल्कि किसान की आर्थिक आवश्यकता है।

हमारी नीतियों को पानी, पोषक तत्वों और ऊर्जा की प्रत्येक इकाई के कुशल उपयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। अनुसंधान में जलवायु-अनुकूल की गई पैदल चाल की ऊर्जा लागत ताई-चाई के मुकाबले 46 प्रतिशत ज्यादा थी। इसलिए यदि कैलोरी खर्च को या कार्डियोवैस्कुलर व्यायाम को मानक माना जाए, तो यह मानने का कोई आधार नहीं है कि धीमी गति से की जाने वाली ताई-चाई वॉकिंग, व्यक्ति की क्षमता के हिसाब से ढाली गई तेज चाल से किसी मायने में श्रेष्ठ है।

यह विमर्श भारतीय संदर्भों में और भी रोचक हो जाता है। हमारे यहां रात्रि के भोजन के बाद टहलने की परंपरा बहुत पुरानी है। महाराष्ट्र में प्रचलित ‘शतयावली’ का शाब्दिक अर्थ ही है—भोजन के बाद सौ कदम चलना। इसके अतिरिक्त भारतीय जीवन-पद्धति में सुबह की सैर, संध्या भ्रमण और भोजनोपरांत धीमे-धीमे टहलना किसी फिटनेस ऐप का आविष्कार नहीं हैं। आधुनिक विज्ञान भी भोजन के बाद पैदल चलने के मूल विचार का समर्थन करता है। भोजन के बाद पैदल चलने को विज्ञान ने एक शारीरिक गतिविधि के रूप में दर्ज करते हुए पाया है कि इससे पोस्ट-मील ग्लूकोज को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। दरअसल, ताई-चाई एक बॉडी मैकेनिक्स है और इसमें नियंत्रित तरीके से वजन को काबू में रखने की कोशिश की जाती है, जबकि शतयावली मुख्यतः भोजन के बाद हल्की चहलकदमी की सांस्कृतिक परंपरा है। लेकिन दोनों ही हमें एक बड़े सत्य तक पहुंचाते हैं—मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए पैदल चलना चाहिए, हर बार नया ब्रांड खरीदना जरूरी नहीं है।

यहां सवाल है कि तब आखिर दुनिया को ताई-चाई वॉकिंग की जरूरत क्यों आन पड़ी है? यह सवाल सेहत के बाजार से जुड़ा है। असल

किस्मों, पानी और पोषक तत्वों का कुशल उपयोग करने वाली फसलों, मृदा जीवविज्ञान में सुधार, एकीकृत कीट प्रबंधन, संरक्षण कृषि और सटीक कृषि को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। दलहनों और तिलहनों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है, क्योंकि उनकी उत्पादकता बढ़ाना भारत की पोषण संबंधी और आर्थिक आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करने के लिए अनिवार्य है।

कुशल बाजार और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाएं

कुशलता से उत्पादन करने वाले किसान को अपनी उपज लाभकारी मूल्य पर बेचने का अवसर भी मिलना चाहिए। कृषि उत्पादन के साथ-साथ कृषि बाजारों, भंडारण, कोल्ड चेन, लॉजिस्टिक्स, ग्रेडिंग, प्रसंस्करण और डिजिटल प्लेटफॉर्म का भी विकास होना चाहिए। कृषि उत्पादन के विस्तार और शीघ्र नष्ट होने वाली उपज के विविधीकरण से कुशल सामूहिक संग्रह और बाजार संपर्क की नई आवश्यकताएं पैदा हुई हैं। किसान समूह, सहकारी संस्थाएं और एफपीओ लेन-देन की लागत घटाकर, सौदेबाजी की क्षमता बढ़ाकर और किसानों को संगठित मूल्य श्रृंखलाओं से जोड़कर परिवर्तनकारी भूमिका निभा सकते हैं। भारत को मंडी से आगे बढ़कर विश्व बाजार की ओर देखना होगा।

हमारा लक्ष्य भारतीय कृषि उत्पादों को ऐसी गुणवत्ता, अनुरूपणीयता, सुरक्षा और ब्रांड पहचान प्रदान करना होना चाहिए, जिन्हें विश्व स्तर पर मान्यता मिले। अगले चरण में किसानों को केवल घरेलू उपभोक्ताओं से ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मूल्य श्रृंखलाओं से भी जोड़ना होगा। इससे रोजगार सृजित होंगे, ग्रामीण उद्यमिता को प्रोत्साहन मिलेगा और कृषि से उत्पन्न मूल्य का अधिक हिस्सा ग्रामीण भारत में ही रह सकेगा। हालांकि, यह परिवर्तन केवल केंद्र सरकार के प्रयासों से संभव नहीं है। कृषि एक साझा राष्ट्रीय जिम्मेदारी है। राज्यों, स्थानीय सरकारों, अनुसंधान संस्थानों, एफपीओ, सहकारी संस्थाओं, निजी उद्यमों, वित्तीय संस्थानों और नागरिक समाज को मिलकर काम करना होगा। भविष्य में कृषि, जल, ऊर्जा, खाद्य प्रसंस्करण, पोषण, जलवायु, व्यापार और ग्रामीण विकास के बीच बेहतर समन्वय आवश्यक है।

यहीं सहकारी संघवाद की भावना महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत की कृषि-पारिस्थितिक विविधता के लिए ऐसे समाधानों की आवश्यकता है, जिनका क्रियान्वयन स्थानीय स्तर पर हो, लेकिन विजन राष्ट्रीय हो। विकसित कृषि से विकसित भारत तक की यात्रा का आकलन केवल उत्पादित टन के आधार पर नहीं, बल्कि किसानों के जीवन की गुणवत्ता से किया जाएगा। समृद्ध किसान समृद्ध ग्रामीण अर्थव्यवस्था की नींव है। गतिशील कृषि सुदृढ़ खाद्य प्रणालियों का आधार है। और प्रतिस्पर्धी कृषि मूल्य श्रृंखला वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी भारत की आधारशिला है। इसलिए हमें इस प्रश्न से आगे बढ़ना होगा कि हम कितना उत्पादन कर सकते हैं? और यह पूछना होगा कि हम कितनी दक्षता, टिकाऊपन और लाभप्रदता के साथ उत्पादन कर सकते हैं?

हरित क्रांति ने भारत के खाद्य भविष्य को सुरक्षित किया। कृषि के अगले परिवर्तनों को भारत की समृद्धि, पोषण, प्राकृतिक संसाधनों और वैश्विक नेतृत्व को सुरक्षित करना होगा। माननीय प्रधानमंत्री ने देश को स्पष्ट दिशा दी है कि भारतीय कृषि विकसित भारत का एक महत्वपूर्ण संघर्ष बने। हमारा दायित्व है कि विज्ञान, नवाचार, अवसररचना, बाजार, संस्थानों और सबसे बढ़कर प्रत्येक कृषि नीति के केंद्र में भारतीय किसान को रखकर इस विजन को कार्यरूप दें। विकसित भारत 2047 की ओर बढ़ते हुए किसान केवल विकास का लाभार्थी न रहे, बल्कि भारत के विकसित भविष्य का निर्माता भी बने। भारत को अब कृषि में इसी परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ना है और 2047 के भारत की नींव इसी पर टिकेगी।

(लेखक भारत सरकार में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री हैं। लेख में व्यक्त विचार व्यक्तिगत हैं।)

डिजिटल बाजार का नया उत्पाद ‘ताई-चाई’ चाल

में, डिजिटल होती जा रही अर्थव्यवस्था में किसी साधारण सलाह की मुश्किल यह है कि उसे बेचना मुश्किल है। ‘रोजाना कुछ देर पैदल चलिए’ के आह्वान में कोई सब्सक्रिप्शन नहीं है। ऐप नहीं हैं। इन्फ्लुएंसर नहीं हैं। पेड प्रोग्राम और प्रमोशन नहीं हैं। और एक दिन में खुद को बदल डालने की सलाह देने वाले चैलेंज नहीं हैं। लेकिन इसी क्रिया को कोई आकर्षक नाम मिल जाए तो उसके प्रति दीवानगी पैदा की जा सकती है।

मनुष्य हजारों वर्षों से पैदल चलता आया है। तीर्थयात्री चले, किसान चले, बौद्ध भिक्षु चले, गांधी और आंदोलनकारी चले। सुबह-सबरे हमारे माता-पिता, चाचा-ताऊ, सबने पैदल चलकर अनंत दूरियां नापी हैं। हर सभ्यता ने पैदल चलने में शरीर के साथ मन को भी गति दी है। लेकिन इधर सोशल मीडिया यानी डिजिटल संसार में एक नई चाल सरपट दौड़ रही है। इंस्टाग्राम, फेसबुक और यूट्यूब पर अचानक ‘ताई-चाई वॉकिंग’ का ट्रेंड जंगल में आग की तरह फैल गया है।

डिजिटल स्क्रीनों पर कहीं धीमे कदम बढ़ाते बुजुर्ग दिखते हैं, तो कहीं आकर्षक देहयष्टि वाले ट्रेनर। कुछेक जगहों पर इसके विज्ञापनों में एम्प्लेएंसर इस चाल को वजन घटाने, पेट की चर्बी कम करने और बढ़ती उम्र को मात देने वाला करिश्माई तरीका बताकर बेच रहे हैं। हमारे देश में भी खासकर प्रौढ़ और साठ पार की उम्र वाले लोगों के बीच इस चाल को लेकर दिलचस्पी बढ़ गई है। हाल में, सेहत के अंतरराष्ट्रीय जर्नल हार्वर्ड हेल्थ ने ‘ताई-चाई वॉकिंग: व्हाट इज़ इट डॉड इट क्व’ शीर्षक से इस पर विस्तृत लेख छापकर और सनसनी फैला दी है। सवाल दिलचस्प है कि क्या दुनिया

ने पैदल चलने का हकीकत में कोई नया तरीका खोज निकाला है या फिर सदियों पुरानी आदत पर सोशल मीडिया-प्रेरित बाजार ने एक नया लेबल चिपका दिया है।

यूं ताई-चाई वॉकिंग का अपना एक इतिहास और प्रतिष्ठा है। यह चीन की सदियों पुरानी मार्शल आर्ट और माईड-बॉडी की परंपरा में आने वाली एक शारीरिक गतिविधि है। इसमें शरीर की धीमी, नियंत्रित गति, संतुलन, श्वास और सजगता का महत्त्व है। हार्वर्ड हेल्थ के मुताबिक, ताई-चाई वॉकिंग मूलतः पैदल चाल (फुट वॉक) को उसके सरलतम रूप में अपनाती है। सामान्य पैदल चाल में शरीर का मोमेंटम (गति) हमें आगे बढ़ाता है, जबकि ताई-चाई वॉकिंग में कदम जानबूझकर धीमे किए जाते हैं। पहले पैर आगे बढ़ाया जाता है, फिर शरीर का भार आहिस्ता से उस पैर पर स्थानांतरित किया जाता है। इसके बाद दूसरा पैर आगे बढ़ाते हुए यही प्रक्रिया दोहराई जाती है। इससे व्यक्ति अपने गुरुत्वीय केंद्र (सेंटर ऑफ ग्रेविटी), जमीन से पैरों के स्पर्श और शरीर के संतुलन के प्रति अधिक सजग होता है। अर्थात् यह केवल ‘धीरे चलना’ नहीं है, बल्कि इसके बायोमैकेनिक्स वास्तव में सामान्य पैदल चाल से कुछ अलग हैं।

अध्ययनों में ताई-चाई वॉकिंग के दौरान सामान्य चाल की तुलना में घुटने और कूल्हे की गति, मांसपेशियों के संचालन और वजन के स्थानांतरण के अलग-अलग स्तर पाए गए हैं। पाया गया कि ताई-चाई वॉकिंग के दौरान व्यक्ति धीमी गति से पैदल चलता है और शरीर के भार को अधिक नियंत्रित तरीके से



राष्ट्रपति मुर्मू ने बस्तर दशहरा की अनूठी परंपराओं और जनजातीय संस्कृति की सराहना की

बस्तर दशहरा सामाजिक समरसता, सामूहिक आस्था और लोकतांत्रिक मूल्यों का जीवंत प्रतीक-राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू बस्तर की आराध्य देवी माँ दैतेश्वरी की पावन भूमि जगदलपुर में आयोजित विश्वप्रसिद्ध बस्तर दशहरा उत्सव में शामिल हुईं। इस अवसर पर उन्होंने बस्तर दशहरा की विशिष्ट धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं की सराहना करते हुए इसे छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक गौरव, सामूहिक आस्था, सामाजिक समरसता और जनजातीय विरासत का जीवंत प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि लगभग 75 दिनों तक चलने वाला यह अनूठा उत्सव विभिन्न समुदायों को एक सूत्र में बांधने और पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं को संरक्षित रखने का उत्कृष्ट उदाहरण है। राष्ट्रपति ने माँ दैतेश्वरी को नमन करते हुए कहा कि बस्तर दशहरा जैसे विश्वप्रसिद्ध उत्सव में शामिल होना उनके लिए विशेष प्रसन्नता का विषय है। इस उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें विभिन्न गोत्रों, समुदायों और समाज के सभी वर्गों की सक्रिय सहभागिता रहती है। रथ निर्माण से लेकर रथ खींचने, पूजा-अर्चना और विभिन्न अनुष्ठानों तक प्रत्येक समुदाय अपनी परंपरागत जिम्मेदारी का निर्वहन करता है। यह सामूहिक सहभागिता सामाजिक एकता, आपसी सहयोग और सांस्कृतिक निरंतरता का असाधारण उदाहरण है।

राष्ट्रपति मुर्मू ने बस्तर दशहरा के अंतर्गत आयोजित होने वाले मुरिया दरबार की परंपरा को जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं का उत्कृष्ट उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि इस परंपरा में समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि एक साथ बैठकर जनसमस्याओं, आवश्यकताओं और सामाजिक विषयों पर विचार-विमर्श करते हैं। सामूहिक संवाद के माध्यम से निकाले गए समाधान समाज की खुशहाली और आपसी सहयोग का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ऐसी परंपराएं भारतीय लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करती हैं और लोकतांत्रिक मूल्यों को नई प्रतिष्ठा प्रदान करती हैं।

उन्होंने कहा कि लगभग दो माह पूर्व राष्ट्रपति भवन में बस्तर के प्रतिनिधिमंडल से उनकी मुलाकात हुई थी। इसमें बस्तर पंडुम के विजेताओं के साथ बस्तर के परगना मांडी और चालकी भी शामिल थे। बस्तर पंडुम जैसे आयोजन जनजातीय युवाओं को अपनी संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपराओं से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

राष्ट्रपति ने कहा कि जनजातीय समाज में अपार प्रतिभा और संभावनाएं हैं। उचित अवसर, प्रोत्साहन और

माओवाद से मुक्त बस्तर में अब नवनिर्माण और विकास की बारी - मुख्यमंत्री साय



संसाधन उपलब्ध होने पर जनजातीय समाज के बेटे-बेटियां जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में देश का गौरव बढ़ा सकते हैं। उन्होंने बस्तर ओलंपिक में जनजातीय युवाओं की उत्साहपूर्ण भागीदारी की सराहना करते हुए कहा कि खेल प्रतिभाओं को उचित मंच मिलने से बस्तर के युवा भविष्य में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकते हैं और ओलंपिक जैसे प्रतिष्ठित आयोजनों में पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ा सकते हैं।

राष्ट्रपति ने छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की समस्या से मुक्ति और सुरक्षा एवं विकास के क्षेत्र में हो रहे सकारात्मक बदलावों का उल्लेख करते हुए केंद्र और राज्य सरकार के समन्वित प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि नक्सलवाद की पीड़ा से मुक्त होकर यह क्षेत्र प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि बस्तर के युवा और जनजातीय समुदाय के लोग अपनी प्रतिभा, परिश्रम और सहभागिता से देश की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने बस्तर क्षेत्र के ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि रामायण में इस अंचल का संबंध दंडकारण्य से जोड़ा जाता है। भगवान श्रीराम के वनवास से संबंधित अनेक प्रसंग इस क्षेत्र की सांस्कृतिक स्मृतियों में विद्यमान हैं। माता शबरी के प्रसंग का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज की सांस्कृतिक विरासत भारतीय परंपरा का अभिन्न अंग है।

उन्होंने कहा कि भगवान श्रीराम के आदर्शों, माता सीता की पवित्रता और माता शबरी की भक्ति से प्रेरणा लेकर समाज को नैतिकता, मर्यादा और मानवीय मूल्यों

को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। बस्तर की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।

बस्तर दशहरा के पारंपरिक अनुष्ठानों का उल्लेख करते हुए राष्ट्रपति ने कुटुम्ब जात्रा के माध्यम से ग्राम देवी-देवताओं की विदाई तथा 27 अक्टूबर को माँ दैतेश्वरी और देवी मावली की डोली विदाई जैसे आयोजनों को इस उत्सव की विशिष्ट धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का परिचायक बताया। उन्होंने माँ दैतेश्वरी से बस्तरवासियों के उज्ज्वल भविष्य, छत्तीसगढ़ की प्रगति और समग्र विकास की कामना की।

राज्यपाल रमन डेका ने बस्तर दशहरा और विजयादशमी की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और लोकतांत्रिक मूल्य हमारी सभ्यता एवं संस्कारों में गहराई से रचे-बसे हैं। उन्होंने कहा कि सामूहिकता जनजातीय समाज की जीवन पद्धति का अभिन्न हिस्सा है। गांवों में सामाजिक नियंत्रण मिल-बैठकर लिए जाते हैं। बड़ों की बात सुनना और प्रत्येक व्यक्ति की आवाज को सम्मान देना जनजातीय समाज की सहज परंपरा रही है। राज्यपाल ने कहा कि बस्तर दशहरा अपनी भव्यता के साथ समाज को साथ लेकर चलने की सीख भी देता है। रथ के लिए लकड़ी लाने से लेकर उसके निर्माण और संचालन तक विभिन्न गांवों एवं समुदायों के लोग अपनी निर्धारित जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं। राजशाही की समाप्ति के बाद भी यह परंपरा निरंतर जारी रही और जनतांत्रिक संवाद के सशक्त मंच के रूप में विकसित हुई।

उन्होंने कहा कि बस्तर दशहरा और मुरिया दरबार यह संदेश देते हैं कि संवाद ही समाधान का मार्ग है। जब शासन और समाज आमने-सामने बैठकर चर्चा करते हैं, तब कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है। उन्होंने मांडी, मुखिया, पुजारी, कारीगरों, रथ निर्माताओं, कलाकारों और स्थानीय प्रशासन सहित उन सभी लोगों के योगदान की सराहना की, जिनके सामूहिक परिश्रम और श्रद्धा से यह विश्वप्रसिद्ध परंपरा पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का माँ दैतेश्वरी की पावन भूमि जगदलपुर में आयोजित बस्तर दशहरा उत्सव में स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी का बस्तर की धरती से गहरा जुड़ाव रहा है। इसी वर्ष फरवरी में उन्होंने बस्तर पंडुम का शुभारंभ किया था। इसके बाद बस्तर पंडुम के विजेताओं को सम्मानित करने के साथ राष्ट्रपति भवन आमंत्रित कर उनका उत्साहवर्धन भी किया। आज बस्तर दशहरा में उनकी उपस्थिति से समस्त बस्तरवासियों का उत्साह बढ़ा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मुरिया दरबार जनजातीय संस्कृति और लोकतांत्रिक परंपराओं की सुंदर अभिव्यक्ति है। लगभग 75 दिनों तक चलने वाला बस्तर दशहरा बस्तर की लोक संस्कृति का आईना है। इसकी रस्में जनजातीय समाज में निहित समतामूलक विचारों, सामूहिक सहभागिता और आपसी विश्वास को प्रदर्शित करती हैं।

उन्होंने कहा कि इस वर्ष बस्तर दशहरा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक ओर राष्ट्रपति की गरिमामय उपस्थिति से उत्सव की प्रतिष्ठा बढ़ी है, वहीं दूसरी ओर बस्तर हिंसक माओवाद से मुक्त होकर नवनिर्माण की दिशा में आगे बढ़ रहा है। बस्तर पंडुम और बस्तर ओलंपिक जैसे आयोजन इस परिवर्तन की गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। बस्तर पंडुम के माध्यम से यहां की समृद्ध जनजातीय कला, संस्कृति और परंपराओं को देश-विदेश तक पहुंचाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने बस्तर की समृद्धि और विकास के लिए स्पष्ट रोजमैप तैयार किया है। नियद नेछारना योजना के माध्यम से दूरस्थ क्षेत्रों तक शासकीय योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना और पीएम-जनमन योजना के तहत अंतरूनी बसाहटों को सड़क मार्ग से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। जहां सड़कें बन चुकी हैं, वहां मुख्यमंत्री ग्रामीण बस योजना के माध्यम से परिवहन सुविधाओं के विस्तार के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि

राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा की विशेष पहल पर ग्रामीण विकास को मिलेगी नई गति, 6.60 करोड़ रुपये के निर्माण कार्य स्वीकृत

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। छत्तीसगढ़ में ग्रामीण क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास और बुनियादी सुविधाओं के विस्तार की दिशा में राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा की विशेष पहल पर 6 करोड़ 60 लाख 38 हजार रुपये की अनुमानित लागत के 67 निर्माण कार्यों की स्वीकृति दी गई है। बलौदाबाजार विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत इन कार्यों में विद्यालयों के अतिरिक्त कक्ष, नवीन आंगनबाड़ी भवन, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के भवन, मुक्तिधाम में शेड एवं प्रतीक्षालय तथा नवीन पंचायत भवनों का निर्माण शामिल है। प्रस्तावित कार्यों के क्रियान्वयन से ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, पोषण, खाद्य सुरक्षा और सार्वजनिक सुविधाओं को मजबूती मिलेगी।

राजस्व मंत्री टंक राम वर्मा के विशेष प्रयास से बलौदाबाजार विधानसभा अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा रहा है। इसके तहत शिक्षा, पोषण, खाद्यान्न वितरण, पंचायत प्रशासन और सार्वजनिक



सुविधाओं से जुड़े कार्यों के माध्यम से गांवों में बुनियादी अधोसंरचना की स्वीकृति दी गई है। मंत्री श्री वर्मा ने कहा कि स्वीकृत किए गए निर्माण पूर्ण होने के बाद ग्रामीणों को विभिन्न शासकीय सेवाओं का लाभ लेने में अधिक सुविधा होगी। इसके साथ ही निर्माण गतिविधियों से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी सृजित हो सकेंगे। बलौदाबाजार विधानसभा क्षेत्र में आवश्यक सुविधाओं का विस्तार करने की यह पहल शिक्षा, पोषण, खाद्य सुरक्षा और स्थानीय प्रशासन को सुदृढ़ बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगी।

ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों को बेहतर शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 1 करोड़ 26 लाख रुपये की अनुमानित लागत से 18 शासकीय विद्यालयों में 36 अतिरिक्त कक्षाओं के निर्माण के प्रस्ताव तैयार किए गए हैं। प्रत्येक विद्यालय में सात लाख रुपये की लागत से दो अतिरिक्त कक्ष बनाए जाने का प्रस्ताव है। इनमें कोनारी, ताराशिव, टोहड़ा, भूमिया, तुलसी (मानपुर), सिलपट्टी, कोटा, देवरी, निनवा, बिलाड़ी, बुंदेली, सिरवे, छौटौद, ओटगन, खम्हरिया, सतभावा, सांकरा और चांपा के शासकीय विद्यालय शामिल हैं। अतिरिक्त कक्षाओं के निर्माण से विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए बेहतर स्थान उपलब्ध होगा तथा शैक्षणिक गतिविधियों के सुचारू संचालन में सहायता मिलेगी।

ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों के पोषण, प्रारंभिक शिक्षा और महिला एवं बाल विकास विभाग की सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए 2 करोड़ 4 लाख रुपये की अनुमानित लागत से 17 नवीन

आंगनबाड़ी भवनों के निर्माण के प्रस्ताव शामिल किए गए हैं। प्रत्येक भवन की लागत 12 लाख रुपये निर्धारित है। मोहगांव, चांपा, टोहड़ा, नकटी, सतभावा, चंगोरी, खुडमुड़ी, लखना, सड्डा, मोहदा, तरपोंगी, सुंगोरा, सगुनी, सिलपट्टी, केवतवा, देवरी और सराखीह में नवीन आंगनबाड़ी भवन प्रस्तावित हैं। इन भवनों के निर्माण से छोटे बच्चों के लिए सुरक्षित और सुविधाजनक वातावरण उपलब्ध होगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से 2 करोड़ 12 लाख 50 हजार रुपये की अनुमानित लागत से 17 पीडीएस भवनों के निर्माण के प्रस्ताव तैयार किए गए हैं। प्रत्येक भवन की लागत 12 लाख 50 हजार रुपये निर्धारित है। इनमें खपरिकला, टंडवा, सरारीडीह, छपोरा, संवरा, बोईरझिटी, भिलौनी, बरतोरी, मानपुर, तरपोंगी, जलसो, खम्हरिया, सड्डा, निनवा, अल्दा, कोटा और तुलसी (मानपुर) शामिल हैं।

मंत्री देवांगन ने कोरबा रेलवे स्टेशन से भारत गौरव टूरिस्ट ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन की महत्वाकांक्षी योजनाओं में से एक मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के तहत आज बिलासपुर संभाग के लगभग 850 श्रद्धालुओं को जगन्नाथ पुरी मंदिर, लिंगराज मंदिर एवं कोणार्क मंदिर के दर्शन हेतु रवाना किया गया। कोरबा रेलवे स्टेशन से भारत गौरव टूरिस्ट ट्रेन के माध्यम से प्रारंभ हुई इस यात्रा का शुभारंभ प्रदेश के वाणिज्य एवं उद्योग, वाणिज्यिक कर (आबकारी) एवं श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन ने हरी झंडी दिखाकर किया। इस अवसर पर उन्होंने तीर्थयात्रियों को शुभकामनाएं देते हुए उनकी सुखद एवं मंगलमय यात्रा की कामना की। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री लखनलाल देवांगन ने कहा कि प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह के नेतृत्व में प्रारंभ की गई मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना के माध्यम से बुजुर्गों को तीर्थ यात्रा का अवसर मिलता था। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय प्रदेश के बुजुर्गों को तीर्थ दर्शन का अवसर प्रदान कर उनका सम्मान और अभिनंदन कर रहे हैं।

पीएम जनमन आवास में ठगी करने पर ठेकेदार शेख निजामुद्दिन उर्फ निक्की खान के विरुद्ध एफआईआर दर्ज

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। प्रधानमंत्री जनमन आवास योजना के तहत जख्तरतमंद परिवारों को पक्का मकान उपलब्ध कराने तथा उनके अधिकारों की रक्षा को लेकर उप मुख्यमंत्री एवं कर्धार्थ विधायक विजय शर्मा ने स्पष्ट किया है कि आवास निर्माण के नाम पर हितग्राहियों से धोखाधड़ी करने और उनकी राशि का दुरुपयोग करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। पिछले दिनों दो ठेकेदारों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज होने के बाद अब बोड़ला विकासखंड के ग्राम दुलदुला में तीन हितग्राहियों से राशि लेने और आवास निर्माण पूरा नहीं करने के मामले में ठेकेदार शेख निजामुद्दिन उर्फ निक्की खान के विरुद्ध भी एफआईआर दर्ज की गई है।

उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि शासन की मंशा है कि कोई भी जख्तरतमंद परिवार पक्के मकान से वंचित न रहे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विशेष रूप से दूरस्थ वनांचलों में निवासरत विशेष पिछड़ी जनजात के परिवारों को पक्का आवास उपलब्ध कराने के लिए प्राथमिकता से कार्य किया जा रहा है। इस संबंध में प्राप्त जानकारी



के अनुसार विकासखण्ड बोड़ला के ग्राम दुलदुला ग्राम पंचायत बेंदा में प्रधानमंत्री जनमन आवास योजना अंतर्गत हितग्राही राजिम धुर्वे द्वारा ठेकेदार शेख निजामुद्दिन उर्फ निक्की खान के विरुद्ध आवास निर्माण करने के नाम पर राशि लेने के बाद भी आवास का निर्माण कार्य पूरा नहीं करने तथा राशि वापस मांगने पर नहीं लौटाने के कारण थाना चिल्मरी में भारतीय न्याय संहिता (बी.एन.एस.) 2023 की धारा 318 (4) के तहत प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराया गया है।

इस संबंध में प्राप्त जानकारी अनुसार हितग्राही राजीम धुर्वे एवं उनके बड़े भाई सोनेलाल धुर्वे तथा पड़ोसी छिरवेया धुर्वे के नाम से प्रधानमंत्री जनमन आवास योजना की स्वीकृति मिली थी। प्रथम किस्त की राशि 40 हजार रूपए प्राप्त कर भूतपूर्व सरपंच चति शेख निजामुद्दिन उर्फ निक्की खान द्वारा आवास निर्माण का ठेका लिया

गया। दूसरे किस्त की राशि 60 हजार रूपए भी ठेकेदार को नगद भुगतान किया गया। पैसे लेने के बाद भी आवास का निर्माण पूरा नहीं किया गया। हितग्राही द्वारा अपने आवेदन में दी गई सूचना अनुसार तीन हितग्राही से 80-80 हजार रूपए सहित कुल 2,40,000 रूपए की राशि छलपूर्वक लेते हुए ठगी करने की शिकायत पर थाना चिल्मरी द्वारा एफआईआर दर्ज किया गया है। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री जनमन आवास के निर्माण कार्यों में कुछ स्थानों पर ठेकेदारों द्वारा हितग्राहियों से छल पूर्वक आवास निर्माण करने के नाम पर ठगी की गई है। निर्माण कार्य पूरा नहीं करने और पैसे वापस नहीं करने पर अब-तक कुल तीन ठेकेदारों के विरुद्ध हितग्राहियों द्वारा संबंधित आरक्षी केन्द्र में एफआईआर दर्ज कराया गया है।

उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने की खिलाड़ियों की हौसला अफजाई

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। छत्तीसगढ़ हॉकी लीग का रोमांच जोर पकड़ रहा है लीग के दूसरे दिन आज के दूसरे मैच में चक्रधर चैंपियंस ने संस्कारधानी स्ट्राइकर्स को 6-4 से मात दी। उप मुख्यमंत्री तथा खेल एवं युवा कल्याण मंत्री अरुण साव भी इस मैच को देखने पहुंचे थे। उन्होंने दोनों टीमों के खिलाड़ियों की हौसला अफजाई की।



ठीक बाहर संस्कारधानी स्ट्राइकर्स के डिफेंडर से बॉल छीनकर गोलपोस्ट के सामने पास कर दी। कार्तिक यादव ने एक बड़ा डाइव लगाकर बढ़त को 2-0 कर दिया।

दूसरे क्वार्टर में चक्रधर चैंपियंस को अपना तीसरा गोल करने में ज्यादा समय नहीं लगा। इस बार यह एक पेनाल्टी कार्नर कवर्जून था, एक रेयर कॉम्बिनेशन जिसमें

डेग फ़िलकर ने बॉल सुनील की ओर भेजी, और फिर वाल्मीकी की ओर, जिन्होंने बॉल को पोस्ट में गाड़ दिया।

इन मुश्किलों के बावजूद संस्कारधानी स्ट्राइकर्स ने क्वार्टर में एक गोल वापस कर लिया जब शैबख ने रिबाउंड पर बोर्ड पर गेंद डाली। शैबख सिंह चंदेल सर्कल के अंदर से बुलेट स्ट्राइक को रोक नहीं सके। स्ट्राइकर्स के लिए चीजें और खराब हो गईं

जब कीपर आदित्य कुमार नेताम ने कार्तिक के खिलाफ टैकल करने की कोशिश की। नतीजतन, वाल्मीकी को पेनल्टी स्ट्रोक मिला और उन्होंने एक और गोल किया।

तीसरा क्वार्टर संस्कारधानी स्ट्राइकर्स के लिए पूरी तरह से बदल गया जहां उन्होंने दो और गोल किए। पहला शहरूख का फ़ील्ड गोल था, जबकि दूसरा शमशेर के आखिरी पेनाल्टी स्ट्रोक से आया, जिससे स्कोर 4-3 हो गया। चौथे क्वार्टर में चक्रधर चैंपियंस ने पूरी ताकत छोड़ दी। मनीषा ने सर्कल में एक बढ़िया डिप्लेक्शन से गोल कर दिया।

इस गोल ने एक तरह से स्ट्राइकर्स की सारी उम्मीदें खत्म कर दीं। एक और पेनाल्टी कार्नर का मतलब था सुनील की टीम के लिए गोल करने का एक और मौका। हालांकि इस बार गोल आया वाल्मीकी के रिबाउंड पर, जिन्होंने रात का अपना तीसरा गोल किया। शमशेर ने फ़ील्ड गोल के साथ मैच खत्म किया, जिससे

स्कोर 6-4 हो गया। शहरूख को स्ट्राइकर ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिला, जबकि वाल्मीकी को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

मैनपाट टाइटन्स और बैलाडीला बुल्स ने 3-3 से करीबी ड्रॉ खेला: इससे पहले मैनपाट टाइटन्स और बैलाडीला बुल्स ने 3-3 से करीबी मुकाबला ड्रॉ खेला। पहले दो क्वार्टर में प्रदीप मोर की मैनपाट टाइटन्स ने दबदबा बनाया, जबकि आखिरी दो क्वार्टर में चिंगलेनसाना सिंह की बैलाडिला बुल्स बेहतर रही।

हाफ टाइम तक टाइटन्स दो गोल से आगे थे, लेकिन जसकरण सिंह और राहुल यादव ने अपनी टीम को वापसी दिलाई, जब किसी को उम्मीद नहीं थी। मैच इतना बराबरी का था कि दोनों टीमों मैच के आखिरी मिनटों में दो-दो गोल करने में सफल रहें। अपने शानदार खेल के लिए प्रहलाद को स्ट्राइकर ऑफ द मैच का अवॉर्ड दिया गया, जबकि करण धानुक प्लेयर ऑफ द मैच रहे।

गंजेपन से मुक्ति मात्र 1 घंटे में

COMPLETE FAMILY SALON

हेयर रिप्लेसमेंट, 100% संतुष्टि की गारंटी

पहले बाद में

JATU'Z

CUT N SHINE

930009-11331

रंगोली वैकल्प के सामने, जयसवाल इलेक्ट्रॉनिक के बाजू में इंदिरा मार्केट, स्टेशन रोड, दुर्गा (छ.ग.)

GST NO. 22AHMPB9621P122

PH.: 0788-4060131

अनुप ट्रेडर्स

आर्टिफिशियल ज्वेलरी के विक्रेता

लिंक रोड, केम्प-2, पावर हाउस, भिलाई

मो. 09826389666, 83839749539



सामंथा ने सीएम विजय को बताया अपना लकी चार्म कहा - सही वक्त पर राजनीति में कदम रखा

अभिनेता सी जोसेफ विजय तमिलनाडु के मुख्यमंत्री हैं। उन्होंने अपने करियर के बीच फिल्मों को अलविदा कह दिया था। उनकी सह-कलाकार सामंथा रुथ प्रभु ने उनकी खूब तारीफ की है। अभिनेत्री आजकल ‘सेलिब्रिटी मास्टरशेफ तमिल’ को होस्ट कर रही हैं। जब उनसे उनके पसंदीदा साथी कलाकार के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने विजय को अपना ‘लकी चार्म’ बताया और उनकी कड़ी मेहनत की तारीफ की।

विजय का करियर

- विजय ने 1984 में फिल्म ‘वेत्ती’ से एक बाल कलाकार के रूप में ऑन-स्क्रीन डेब्यू किया था।
- 1992 में उन्होंने फिल्म ‘नालेया थीरपु’ से लीड एक्टर के तौर पर शुरुआत की।
- 1996 में आई ‘कोयंबटूर मपिळई’ उनकी पहली कमर्शियल ब्लॉकबस्टर फिल्म थी।
- जब विजय ने फिल्मों से संन्यास लिया, तब वे अपने करियर के शिखर पर थे।
- उनकी फिल्म ‘लियो’ कॉलीवुड (तमिल सिनेमा) की अब तक की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में से एक रही।

विजय ने राजनीति में रखा कदम

- 2024 में विजय ने आधिकारिक तौर पर राजनीति में आने की घोषणा की और अपनी पार्टी ‘तमिलगाम वेत्ती कझगम’ लॉन्च की।
- तमिलनाडु के इतिहास में पहली बार, उनकी पार्टी सत्ता में आने वाली पहली गैर-द्रविड़ पार्टी बनी।
- इस साल मई में उन्होंने राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में कार्यभार संभाला। उनकी आखिरी फिल्म ‘जन नायकन’ थी।
- सामंथा, जिन्हें आखिरी बार ‘मां इंटी बंगारम’ में देखा गया था, राज निदिमोरु के साथ अपने पहले बच्चे की उम्मीद कर रही हैं।

सामंथा ने सीएम विजय को बताया लकी चार्म

शो के अपकमिंग एपिसोड में जब ‘हीरो बनाम विलेन’ चैलेंज के दौरान आरजे विजय ने सामंथा से पूछा कि उनका पसंदीदा स्टार कौन है, तो उन्होंने कहा कि विजय के प्रति उनकी पसंद के बारे में तो सभी जानते हैं। उन्होंने कहा, ‘वह मेरे लकी चार्म हैं। मैंने उनके साथ तीन सुपरहिट फिल्मों में काम किया है।’ उन्होंने ‘कल्थी’ (2014), ‘थेसै’ (2016) और ‘मर्सल’ (2017) का जिक्र किया। ये तीनों फिल्में कमर्शियल रूप से बेहद सफल रहीं। दुनिया भर में इन फिल्मों ने 100 करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई की।

सामंथा ने की विजय की सीएम तारीफ

सामंथा ने विजय के राजनीतिक सफर के बारे में भी बात की। उन्होंने कहा कि एक इंसान के तौर पर विजय सबके लिए प्रेरणा हैं। सामंथा ने कहा, ‘करोड़ों फैस होने के बावजूद उन्होंने एक नेता बनने और शासन की जिम्मेदारी संभालने का रास्ता चुना। वह शांत रहते हैं, अपने लक्ष्य पर फोकस रखते हैं और परदे के पीछे रहकर बहुत कड़ी मेहनत करते हैं।’ उन्होंने आगे कहा, ‘अपने करियर के पीक पर सिनेमा को छोड़कर राजनीति में आना कोई आसान फैसला नहीं है।’ सामंथा ने कहा कि विजय ने बिल्कुल सही समय पर राजनीति में कदम रखा है।

निजी दर्द को शब्दों में पिरोकर कादर खान ने लिखा था मुकद्दर का सिकंदर का यादगार सीन

बॉलीवुड अभिनेता कादर खान ने अपने करियर में कभी विलेन बनकर दर्शकों को डराया, तो कभी कॉमेडी से हंसाया। वहीं अपनी लेखनी से अमिताभ बच्चन जैसे सुपरस्टार के किरदारों को खास पहचान भी दी लेकिन फिल्मों में आने से पहले कादर खान की जिंदगी बिल्कुल अलग थी। वह सिविल इंजीनियरिंग के प्रोफेसर थे और पढ़ाने के साथ थिएटर में भी एक्टिव रहते थे। फिर उनकी जिंदगी में एक ऐसा मोड़ आया, जिसने उन्हें हिंदी सिनेमा के सबसे चर्चित डायलॉग राइटर्स में शामिल कर दिया। कादर खान के लिखे डायलॉग्स की ताकत का एक बड़ा उदाहरण 1978 में रिलीज हुई फिल्म मुकद्दर का सिकंदर का 16 पन्नों वाला सीन है।

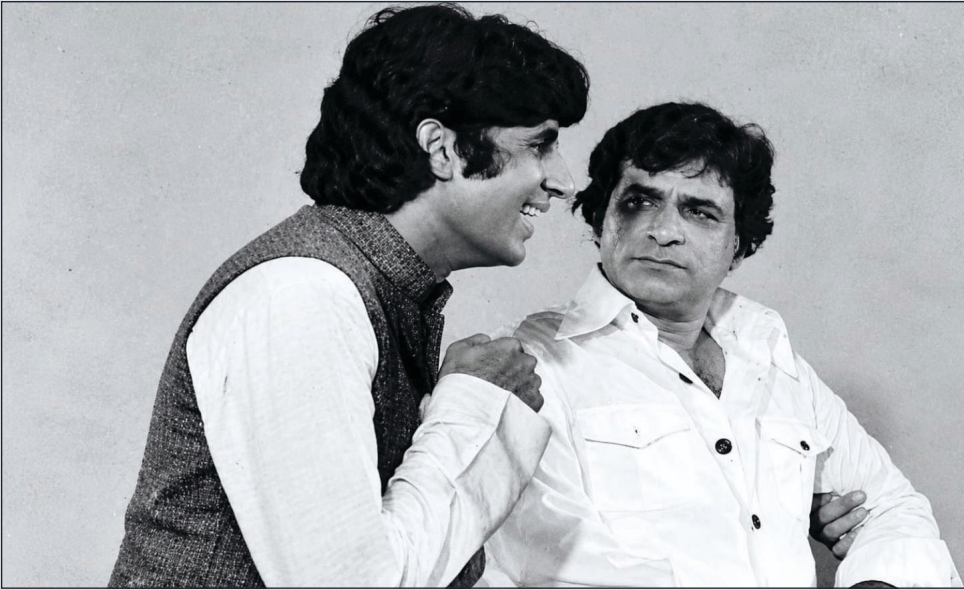
कादर खान ने इस सीन में अपने जीवन के अनुभवों को उतार दिया था। जब उन्होंने अमिताभ बच्चन को इसे सुनाया तो बिग बी इतने भावुक हो गए कि उनकी आंखों में आंसू आ गए। कादर खान का जन्म 1937 में काबुल में हुआ था। उनका परिवार बाद में मुंबई आ गया, जहां उन्होंने मुश्किल हालात में अपना बचपन बिताया। पढ़ाई पूरी करने के बाद वह मुंबई के एमएच साबू सिव्ही कॉलेजिनक में लेक्चरर रहे और उन्हें बेस्ट टीचर का अवॉर्ड भी मिला लेकिन पढ़ाने के साथ-साथ एक्टिंग और

अमिताभ बच्चन हो गए थे भावुक.....

डायलॉग लिखने का शौक उनके भीतर बना रहा। वह थिएटर में हिस्सा लेते थे और स्टेज पर अपनी प्रतिभा दिखाते थे। इसी दौरान एक नाटक में उनके काम ने लोगों का ध्यान खींचा और उन्हें फिल्मों के लिए डायलॉग लिखने का मौका मिला। कादर खान ने 1970 के दशक की शुरुआत में फिल्मों के लिए डायलॉग लिखना शुरू किया। 1972 में आई फिल्म जवानी दीवानी को उनके शुरुआती फिल्मी लेखन के अहम पड़ाव के तौर पर याद किया जाता है। इसके बाद राजेश खन्ना की फिल्म रोटी ने उनके करियर को नई पहचान दी।

मनमोहन देसाई और प्रकाश मेहरा जैसे डायरेक्टर के साथ उनके काम ने उन्हें इंडस्ट्री में मजबूत जगह दिलाई। उन्होंने अमर अकबर एंथनी, परवरिश, मुकद्दर का सिकंदर, लावारिस, नसीब और कुली जैसी फिल्मों के लिए डायलॉग लिखे। उनकी खासियत यह थी कि वह किरदार के हिसाब से भाषा और अंदाज बदल लेते थे। उनके डायलॉग में कहीं इमोशन था, कहीं गुस्सा और कहीं ऐसा मजाक, जो सीधे दर्शकों से जुड़ जाता था।

कादर खान के करियर का एक यादगार किस्सा फिल्म मुकद्दर का सिकंदर से जुड़ा है। उन्होंने बताया था कि



‘100 बार शादी के लिए पूछा...’, रश्मिका को लेकर विजय देवरकोंडा के बयान से भड़के लोग

विजय देवरकोंडा इस वक्त सोशल मीडिया पर सुर्खियां बटोर रहे हैं और इसकी वजह उनकी हालिया रिलीज फिल्म ‘रणवाली’ नहीं बल्कि उनका एक बयान है। दरअसल, विजय देवरकोंडा अपनी पत्नी रश्मिका मंदाना के साथ करण जौहर के चैट शो ‘कॉफी विद करण सीजन 9’ में आए थे। इस शो में उन्होंने रश्मिका संग शादी की वजह बताई जिसके बाद लोगों का गुस्सा फूट पड़ा।

रश्मिका ने 100 बार शादी के लिए पूछा

शो में करण जौहर ने मैरिज प्रपोजल के बारे में पूछा, तब उन्होंने खुलासा किया कि उन्होंने रश्मिका से 100 बार शादी के लिए पूछने के लिए कहा था और उन्होंने करीब एक साल तक उनसे शादी के लिए पूछा।

कई लोग विजय को रोस्ट कर रहे हैं और कह रहे हैं, रश्मिका विजय से प्यार करती हैं, लेकिन विजय खुद से प्यार करते हैं। वहीं, कुछ कह रहे हैं कि रश्मिका को थोड़ी सेल्फ रिस्पेक्ट रखनी चाहिए। यही नहीं, कुछ लोग विजय को रेड फ्लैग बुला रहे हैं। कुछ यह भी कह रहे हैं कि विजय ने रश्मिका को शर्मिंदा कर दिया। सोशल मीडिया पर एक्टर को बुरी तरह ट्रोल किया जा रहा है।



सोते-सोते अचानक क्यों लगता है गिरने का झटका? हाइपनिक जर्क के पीछे हो सकते हैं तनाव, थकान और नींद की कमी जैसे कारण



सोते समय अचानक हाथ-पैर या पूरे शरीर में झटका लगना कई लोगों के साथ होता है। कई बार ऐसा महसूस होता है, जैसे व्यक्ति ऊंचाई से गिर रहा हो और उसी समय शरीर झटके से हिल जाता है। इस स्थिति को हाइपनिक जर्क (Hypnic Jerk), स्लीप स्टार्ट (Sleep Start) या हाइपनागोजिक जर्क कहा जाता है। यह आमतौर पर जागने से नींद में जाने के दौरान होता है और स्वस्थ लोगों में भी देखा जा सकता है।

तया है हाइपनिक जर्क?

हाइपनिक जर्क मांसपेशियों में होने वाला अचानक और कुछ पल का अनैच्छिक संकुचन है। जब शरीर जागने की अवस्था से नींद की ओर बढ़ता है, तो मस्तिष्क और मांसपेशियों की सक्रियता में बदलाव होने लगता है। इसी दौरान कभी-कभी हाथ, पैर, कंधे या पूरे शरीर में झटका महसूस हो सकता है। कुछ लोगों को इसके साथ गिरने जैसा एहसास भी होता है। आमतौर पर यह किसी गंभीर बीमारी का संकेत नहीं होता।

नींद के दौरान शरीर में तया बदलाव होते हैं?

नींद अचानक शुरू नहीं होती, बल्कि जागने से सोने तक शरीर कई बदलावों से गुजरता

है। इस दौरान मस्तिष्क की गतिविधियों और मांसपेशियों की सक्रियता में परिवर्तन होता है। इसी बदलाव के बीच कुछ लोगों में अचानक मांसपेशियां सिकुड़ सकती हैं, जिससे झटका महसूस होता है। इसे नींद और जागने के बीच होने वाली सामान्य शारीरिक घटना माना जाता है।

तया तनाव और थकान से बढ़ सकते हैं झटके?

तनाव, चिंता, अत्यधिक थकान और नींद की कमी हाइपनिक जर्क को बढ़ाने वाले संभावित कारक हैं। जब व्यक्ति मानसिक तनाव में होता है या सोने से पहले भी उसके मन में लगातार विचार चलते रहते हैं, तो नींद आने में परेशानी हो सकती है। इसके अलावा कैफ़ीन यानी चाय-कॉफी का

अधिक सेवन भी नींद को प्रभावित कर सकता है और कुछ लोगों में झटके अधिक महसूस हो सकते हैं।

कब डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए?

कभी-कभार सोते समय झटका लगना आमतौर पर चिंता की बात नहीं है। हालांकि, अगर झटके बार-बार आने लगें, नींद में बाधा डालें या उनके साथ अन्य असामान्य लक्षण दिखाई दें, तो डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है।

क्या करें? नियमित समय पर सोएं, पर्याप्त नींद लें, तनाव कम करने की कोशिश करें और सोने से पहले चाय-कॉफी का सेवन सीमित रखें। अच्छी नींद की आदतें शरीर और मस्तिष्क को आराम देने में मदद करती हैं।

‘रावण का किरदार कोई नहीं करना चाहता’ साईं पल्लवी ने की यश की तारीफ

निर्देशक नितेश तिवारी की फिल्म ‘रामायण’ को रिलीज होने में अब बस कुछ ही दिन बचे हैं। ऐसे में मैकर्स और फिल्म की कास्ट भारत के अलग-अलग शहरों में जाकर जोर-शोर से इसका प्रमोशन कर रहे हैं।

हाल ही में हैदराबाद में हुए एक इवेंट में फिल्म में ‘सीता’ का किरदार निभा रही साईं पल्लवी ने फिल्म में ‘रावण’ की भूमिका निभाने के यश के फैसले की तारीफ की। साईं पल्लवी ने कहा कि यश ने इस किरदार को पूरी तरह अपना लिया और लोगों की नफरत के बजाय उनका प्यार हासिल किया।

तया बोलीं साईं पल्लवी?

साईं पल्लवी ने कहा, ‘कोई भी रावण का किरदार नहीं निभाना चाहता, क्योंकि इस किरदार के साथ नफरत जुड़ी होती है, लेकिन यश ने यह किरदार निभाया और इसके बदले सभी का प्यार जीता।’

त्यों यश ने निभाया ‘रावण’ का किरदार

इससे पहले एक बातचीत में यश ने बताया था कि फिल्म के सह-निर्माताओं में से एक होने के बावजूद उन्होंने भगवान राम के बजाय रावण का किरदार निभाने का फैसला क्यों किया। यश ने कहा था, ‘राम की भलाई दिखाने के लिए रावण की बुराई भी तो चाहिए।’ अपनी एक्टिंग पर भरोसा जताते हुए यश ने कहा, ‘मुझसे अच्छी बुराई कोई दिखा नहीं सकता।’ फिर जब अभिनेता से पूछा गया कि तो क्या आपने पर्दे पर बुरा आदमी बनने की जिम्मेदारी ले ली है? इसके जवाब में यश ने कहा, ‘जब मैं अच्छा किरदार भी करूंगा ना, मुझसे अच्छा कोई भी नहीं होगा।’

यश ने आगे कहा, ‘रावण को देखकर लगना चाहिए कि इसको कैसे मारा जाए? हम सभी ने अपने अहंकार को एक तरफ रख दिया है। रामायण में बात



मेरे स्टारडम या एक स्टार के तौर पर मेरी पहचान की नहीं है। इस प्रोजेक्ट पर सबसे अच्छे लोग काम कर रहे हैं।’

कब रिलीज होगी फिल्म ‘रामायण’?

फिल्म ‘रामायण’ दो पार्ट में रिलीज होगी। इसका पहला पार्ट अक्टूबर 2026 में दिवाली से पहले दुनियाभर में रिलीज होने वाला है। जबकि दूसरा पार्ट दिवाली 2027 पर रिलीज किया जाएगा।

फिल्म ‘रामायण’ को करीब 4,000 करोड़ रुपये के भारी-भरकम बजट में बनाया गया है।

खास-खबर

हेल्पलाइन की त्वरित पहल से सुरेश सारथी की बेटी को मिला जन्म प्रमाण पत्र

रायपुर। छत्तीसगढ़ सरकार की महत्वाकांक्षी पहल मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076 आम नागरिकों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही है। इसका एक बेहतरीन उदाहरण सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले के बरमकेला तहसील अंतर्गत ग्राम बाथ निवासी सुरेश कुमार सारथी की यह कहानी है, जिनकी वर्षों की चिंता एक फोन कॉल से दूर हो गई। सुरेश कुमार सारथी अपनी नवजात पुत्री का जन्म प्रमाण पत्र बनवाने के लिए काफी समय से परेशान थे। आवश्यक दस्तावेज न होने के कारण उन्हें कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। ऐसे में जब उन्हें कोई अन्य रास्ता नहीं सूझा, तो उन्होंने शासन की जन-कल्याणकारी सेवा मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076 का सहारा लिया और अपनी समस्या दर्ज कराई। हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज होते ही प्रशासनिक तंत्र सक्रिय हो गया। मामले को गंभीरता से लेते हुए स्वास्थ्य विभाग ने तुरंत आवश्यक प्रक्रिया शुरू की। विभाग की तत्परता का यह परिणाम रहा कि कुछ ही समय में स्वास्थ्य केंद्र देवगांव द्वारा उनकी पुत्री का जन्म प्रमाण पत्र तैयार कर उन्हें सौंप दिया गया। बेटी का जन्म प्रमाण पत्र हाथ में आते ही सुरेश कुमार सारथी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

जनगणना-2027 की तैयारियों को लेकर दो दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण सप्ता

मुंगेली। जनगणना-2027 के आगामी चरण की तैयारियों को व्यवस्थित एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से जिला कलेक्टरेट स्थित मनियारी सभाकक्ष में दो दिवसीय जिला स्तरीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। कलेक्टर एवं प्रमुख जनगणना अधिकारी अमृत विकास तोपनो के निर्देशानुसार आयोजित इस प्रशिक्षण में जिला एवं चार्ज स्तर के जनगणना अधिकारियों तथा कर्मचारियों को जनगणना की प्रक्रिया, कार्यप्रणाली और दायित्वों की विस्तृत जानकारी दी गई। जनगणना कार्यालय द्वारा नियुक्त प्रशिक्षक श्री विद्यानंद एवं श्री विक्रम ने प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। प्रशिक्षण का उद्देश्य जनगणना कार्य से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों की दक्षता बढ़ाना, निर्धारित प्रक्रियाओं को स्पष्ट समझ विकसित करना तथा आगामी कार्यों को बेहतर समन्वय के साथ संपन्न कराना रहा। प्रशिक्षण के निर्धारित कार्यक्रम में जनगणना की अवधारणा एवं परिभाषाओं, मोबाइल ऐप की उपयोगिता और कार्यप्रणाली, निगरानी के लिए डेटा की गुणवत्ता के मापकों तथा ई-जनगणना पोर्टल पर स्व-गणना जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी दी गई। प्रशासनिक अधिकारियों की भूमिका, जनसंख्या गणना के लिए भूमिडिया एवं प्रचार गतिविधियों, मुद्रण एवं लॉजिस्टिक्स तथा आवश्यक किट सामग्री के प्रबंधन पर भी प्रशिक्षण दिया गया।

सांसद चिंतामणि महाराज ने सभी खिलाड़ियों से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का किया आह्वान

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। सरगुजा संभाग के मुख्यालय अम्बिकापुर में आज से 4 दिवसीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता का रंगारंग आगाज हुआ। राज्य स्तरीय स्पर्धा का आयोजन सरगुजा अंचल वासियों के लिए गौरव का क्षण है। शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (मल्टीपरपज स्कूल) ग्राउंड, अंबिकापुर में 26वीं चार दिवसीय राज्यस्तरीय शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता 2026 का शुभारंभ सांसद सरगुजा चिंतामणि महाराज के मुख्य आतिथ्य में हुआ। खेल का शुभारंभ सांसद महाराज द्वारा बास्केट में बाल डालकर किया गया। इस प्रतियोगिता में बस्तर, बिलासपुर, दुर्ग, रायपुर और सरगुजा संभाग के खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। शुभारंभ समारोह में विद्यार्थियों ने बिहू नृत्य, पारंपरिक गीत-संगीत और विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां से कार्यक्रम को आकर्षक बनाया।

इस अवसर पर सांसद चिंतामणि महाराज ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। खेलों से बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास को बढ़ावा मिलता है तथा उनमें अनुशासन, आत्मविश्वास, टीम भावना और प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित



होती है। उन्होंने खिलाड़ियों से पूरे उत्साह और खेल भावना के साथ प्रतियोगिता में भाग लेने, निरंतर अभ्यास करने तथा खेल के क्षेत्र में आगे बढ़कर उच्च स्तरीय प्रतियोगिताओं में अपनी पहचान बनाने का आह्वान किया। खेलों के जरिए राष्ट्रीय एकता की भावना भी मजबूत होती है। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन से विद्यार्थियों को अपनी खेल प्रतिभा प्रदर्शित करने तथा उच्च स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए तैयार होने का अवसर मिलता है। सांसद ने खिलाड़ियों से खेल भावना के साथ खेलने का आह्वान किया।

साथ ही सांसद महाराज ने कहा कि राज्य के सभी संभाग के खिलाड़ी इस प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। इन प्रतियोगिताओं में भागीदारी कर रहे सभी 215 छात्र एवं 245 छात्राओं को शुभकामनाएं देते हुए खेल भावना, अनुशासन और उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ प्रतियोगिता में भाग लेने का आह्वान किया। इस दौरान

चार खेलों की विभिन्न वर्गों में होगी प्रतियोगिताएं

चार दिवसीय इस राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में फुटबॉल, बास्केटबॉल, बैडमिंटन और सॉफ्टबॉल टेनिस की प्रतियोगिताएं विभिन्न आयु वर्गों में आयोजित की जा रही हैं। प्रतियोगिता के अंतर्गत 19 वर्ष आयु वर्ग के बालकों की फुटबॉल प्रतियोगिता, 14 एवं 17 वर्ष आयु वर्ग की बालिकाओं की बास्केटबॉल प्रतियोगिता तथा 17 से 19 वर्ष आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं की बैडमिंटन और सॉफ्टबॉल टेनिस प्रतियोगिताएं शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि इस खेल कार्यक्रम में 215 छात्र और 245 छात्राएं शामिल हो रही हैं। इस आयोजन में विभिन्न संभागों से आए खिलाड़ियों को प्रतियोगिता के माध्यम से अपनी खेल क्षमता निखारने, प्रतिस्पर्धात्मक अनुभव प्राप्त करने और भविष्य की बड़ी खेल स्पर्धाओं के लिए स्वयं को तैयार करने का अवसर मिल रहा है।

भागीदारी निभाने की अपील की। उन्होंने कहा कि स्वच्छता की शुरुआत अपने घर और आसपास के क्षेत्रों से होती है। विद्यार्थियों को अपने परिवेश को स्वच्छ रखने के साथ दूसरों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक करना चाहिए।

‘अथ उद्यम’ से ग्रामीण महिलाओं को मिलेगी नई पहचान

छत्तीसगढ़ सरकार और आईआईएम रायपुर की संयुक्त पहल से महिला उद्यमियों को मिलेगा प्रशिक्षण, मार्गदर्शन और बाजार से जुड़ने का अवसर

श्रीकंचनपथ न्यूज



रायपुर। छत्तीसगढ़ की ग्रामीण महिलाओं को आजीविका से आगे बढ़ाकर सफल उद्यमी बनाने की दिशा में राज्य सरकार ने एक अभिनव पहल की है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व एवं उप मुख्यमंत्री तथा पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री विजय शर्मा के मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन ‘बिहान’ और भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) रायपुर के फंटेडेशन फॉर एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट की संयुक्त पहल ‘अथ उद्यम’ ग्रामीण महिला उद्यमियों के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोल रही है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं के छोटे व्यवसायों को व्यवस्थित, लाभकारी और विस्तार योग्य उद्यमों के रूप में विकसित करना है।

‘आजीविका से उद्यमिता की ओर’ की अवधारणा पर आधारित इस विशेष इन्क्यूबेशन कार्यक्रम की शुरुआत केंद्रीय ग्रामीण विकास

मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 11 सितंबर 2026 को की थी। पहल को लेकर महिला उद्यमियों में उत्साह देखा जा रहा है। अब तक पूरे राज्य से एक हजार से अधिक आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। इच्छुक महिलाएं 31 अक्टूबर 2026 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकती हैं। ‘अथ उद्यम’ की विशेषता यह है कि इसमें महिलाओं को केवल व्यवसाय शुरू करने या संचालित करने का प्रशिक्षण ही नहीं, बल्कि उनके मौजूदा उद्यमों को आगे बढ़ाने के लिए व्यावहारिक

गांवों के छोटे व्यवसायों को मिलेगा बड़ा बाजार

इस पहल से खाद्य प्रसंस्करण, सिलाई एवं वस्त्र निर्माण, हस्तशिल्प, हथकरघा, वनोपज मूल्य संवर्धन, स्थानीय उत्पाद निर्माण, पैकेजिंग और विभिन्न सेवा आधारित गैर-कृषि व्यवसायों से जुड़ी महिलाओं को लाभ मिलेगा। कार्यक्रम के माध्यम से महिलाएं अपने उत्पादों की बेहतर पहचान स्थापित कर सकेंगी तथा स्थानीय बाजारों से आगे नए ग्राहकों तक पहुंच बनाने के लिए आवश्यक व्यावसायिक कौशल विकसित कर सकेंगी। विशेष रूप से उन महिलाओं को अवसर मिलेगा, जो पहले से कोई गैर-कृषि उद्यम संचालित कर रही हैं और अपने व्यवसाय का विस्तार करना चाहती हैं। स्वयं सहायता समूहों की सदस्य अथवा उनसे जुड़े परिवारों की महिला उद्यमी कार्यक्रम के लिए आवेदन कर सकती हैं।

सहायता भी दी जाएगी। चयनित महिला उद्यमियों को 64 घंटे का चरणबद्ध व्यवसाय विकास प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इससे साथ ही एक वर्ष तक विशेषज्ञों का परामर्श, व्यक्तिगत मार्गदर्शन, क्षेत्रीय स्तर पर सहयोग और सफल उद्यमियों के अनुभवों से सीखने के अवसर उपलब्ध होंगे। प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं को अपने उत्पाद की गुणवत्ता सुधारने, लागत एवं लाभ की गणना करने, बिक्री और व्यय का रिकॉर्ड रखने, उत्पादन एवं

वितरण की बेहतर योजना बनाने तथा ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार व्यवसाय विकसित करने के तरीके सिखाए जाएंगे। बाजार की मांग, पैकेजिंग, ब्रांडिंग और वित्तीय प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी मार्गदर्शन दिया जाएगा। कार्यक्रम के माध्यम से बाजार एवं ब्रांड से जुड़ाव के साथ ऋण तथा वित्तीय संस्थानों तक पहुंच बनाने में भी सहयोग किया जाएगा। कार्यक्रम की जानकारी अधिक से अधिक ग्रामीण महिला उद्यमियों तक पहुंचाने के लिए

शब्दबीज को मिला नया आयाम, 49 हजार बच्चों ने एक साथ सीखा ‘सतर्क’

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। छत्तीसगढ़ में बच्चों की भाषा और शब्द-संपदा बढ़ाने के लिए सूरजपुर जिले में शैक्षणिक नवाचार ‘शब्दबीज’ को नया स्वरूप दिया गया है। ‘एक शब्द प्रतिदिन’ के साथ शुरू की गई ‘एक जिला-एक शब्द’ पहल के तहत जिले की कक्षा पहली से पांचवीं तक के लगभग 49 हजार बच्चों ने एक साथ सप्ताह का साझा शब्द ‘सतर्क’ सीखा।

‘एक शब्द प्रतिदिन, ज्ञान का वृक्ष जीवनभर’ की भावना से संचालित शब्दबीज बच्चों की नियमित रूप से नए शब्द सीखने का अवसर देता है। नई पहल से इस व्यक्तिगत सीख को सामूहिक अनुभव से जोड़ा गया है। जिले के अलग-अलग क्षेत्रों, गांवों और विद्यालयों के बच्चे जब एक ही दिन एक साझा शब्द सीखते हैं, तो उनमें यह भाव भी विकसित होता है कि वे एक साझा शैक्षणिक यात्रा का हिस्सा हैं। ‘एक जिला-एक



शब्द’ का उद्देश्य बच्चों को नया शब्द सिखाने के साथ उनमें सीखने की साझा पहचान और सामूहिक सहभागिता की भावना विकसित करना है। विद्यालयों में शिक्षक साझा शब्द का अर्थ, सही उच्चारण, वाक्य-प्रयोग और दैनिक जीवन में उसके उपयोग से जुड़ी गतिविधियां करा रहे हैं। इससे बच्चों को शब्द को समझने और व्यवहार में इस्तेमाल करने का अवसर मिल रहा है।

यह पहल शैक्षणिक नवाचार को व्यापक स्तर पर बच्चों से जोड़ते हुए भाषा-कौशल और सीखने के प्रति रुचि बढ़ाने का प्रयास है।

फार्मर प्रोड्यूसर कंपनियों के माध्यम से कृषि सखी एवं पशु सखी की आजीविका को मिल रहा बढ़ावा

श्रीकंचनपथ न्यूज

रायपुर। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (बिहान) के तहत कोण्डगांव जिले में ग्रामीण महिलाओं की आजीविका को सुदृढ़ करने और उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए फार्मर प्रोड्यूसर कंपनियों के माध्यम से विभिन्न गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। इन गतिविधियों में कृषि, मुर्गीपालन तथा खाद-बीज संबंधित कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। इससे कृषि सखी एवं पशु सखी के लिए आजीविका के



नए अवसर विकसित हो रहे हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्यमों को बढ़ावा मिल रहा है।

जिले में ग्रामीण महिलाओं को संगठित कर उनकी आर्थिक भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से फार्मर प्रोड्यूसर कंपनियों के माध्यम से कृषि आधारित गतिविधियों का विस्तार किया जा रहा है। इसके तहत एकीकृत फार्मिंग क्लस्टर

वीबीजी-रामजी योजना के प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर

मुंगेली। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाने, विकास कार्यों में गुणवत्ता सुनिश्चित करने और ग्राम पंचायतों की योजनागत क्षमता मजबूत करने के उद्देश्य से जनपद पंचायत पथरिया के सभाकक्ष में वीबीजी-रामजी योजना के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर संयुक्त कार्यशाला सह समीक्षा बैठक आयोजित की गई। कलेक्टर अमृत विकास तोपना के निर्देशन एवं जिला पंचायत सीईओ गोकुल रावटे के मार्गदर्शन में आयोजित बैठक में तकनीकी सहायकों, सरपंचों, सचिवों और रोजगार सहायकों ने भाग लिया। बैठक में प्रत्येक ग्राम पंचायत के लिए आगामी पांच वर्षों की बेहतर ग्राम विकास योजना तैयार करने के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई।

SAIRAM
Mobile Accessories

मोबाईल शॉप में कार्य करने हेतु लड़कों की आवश्यकता है

7000415602

Shop No. 78, Himalaya Complex, Supela, Bhilai

चौरसिया ज्वेलर्स

आकर्षक सोने चांदी के आभूषणों के निर्माता एवं विक्रेता

बेन्वेक्स एवं ग्रहलत उपलब्ध यहां
उचित व्याज दर पर धीरवी रखी जाती है

मुक्तिधाम रोड, रामनगर, सुपेला, भिलाई
9827938211, 9827171332

CAR DECOR

House Of Exclusive
Seat Cover,
Car Stereos Matting &
Sun Control Film &
Other Accessories

**Shop No.3 Nafish Tower,
Opp. Indian Coffee House,
Akashganga, Bhilai**

Mo.9300771925, 0788-4030919

K. Satyanarayan

**ROCKEY INDUSTRIES
FURNITURE PALACE**

Deals in: (Steel & Wooden)
Luxury & Imported Furniture

Akash Ganga, Supela, Bhilai Ph. 22964330

Shri Vijay Enterprises

Sanitarywares, Tiles,
CPVC Pipes &
Bathroom Fittings etc.

Supela Market, Bhilai
PH. 0788-4030909, 2295573

खास खबर

ग्रामीण क्षेत्र से शहर में लाकर मवेशियों को छोड़ रहे, वसूला जुर्माना

राजनांदगांव। ग्राम सिंघोला की ओर से लगभग 50 की तादात में मवेशी लाकर शहर में छोड़ा जा रहा था, जिसकी जानकारी होते ही हल्दी के पास उक्त मवेशियो को पकड़ संबंधित पर 7 हजार 7 सौ रुपये जुर्माना लगा मवेशी वापस भेजा गया। पकड़े मवेशियो में शहर के मवेशी को रेवाडीह कांजी हाउस भेजा गया। शुक्रवार सुबह ग्राम सिंघोला से लगभग 50 मवेशी लाकर शहर में छोड़ने की तैयारी थी, जिसकी जानकारी हल्दी के पार्षद चंद्रकृत साहू द्वारा आयुक्त श्री जी. आर. मरकाम को दी गयी। जानकारी मिलते ही आयुक्त ने निगम के अमला के साथ हल्दी पटुच सभी मवेशियो को एक जगह एकत्रित करा संबंधित मवेशी मालिको को सिंघोला से बुलवाकर उनपर 7 हजार 7 सौ रूपये जुर्माना लगा मवेशी वापस भेजे। उन्होंने संबंधितो को चेतावनी दी कि अपना मवेशी का उचित प्रबंधन करे, इस प्रकार शहर मे लाकर मवेशी छोड़ने पर कडी कार्यवाही की जावेगी।

स्कैन होते ही कट गए

11,990 चालान, केवल 2044 का हुआ भुगतान

राजनांदगांव। यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ कार्रवाई के तहत जिले में बड़ी संख्या में चालान जारी किए गए हैं। एएनपीआर कैमरे के जरिए आनलाइन चालान वाहन चालको के आरसी नंबर पर उल्लेख कि गए और उन्हें मोबाइल के जरिए भी भेजे गए हैं। इस कार्यवाही से बड़ी संख्या में वाहन चालकों के होश उड़े हुए ही है। राजनांदगांव में दो से तीन जगह यह कैमरा लगाया गया है। जहां स्कैनर कैमरा लगाए गए हैं, वहां से वाहन गुजरते कार्यवाही की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। कमी मिलने पर आरसी में भी चालान आनलाइन रिकार्ड दर्ज हो जाता है। अतिरिओ विभाग से प्राप्त जानकारी अनुसार कुल 11,990 चालान जारी किए गए हैं। इनमें से 2,044 चालानों का भुगतान हो चुका है, जबकि 9,946 चालान अब भी लंबित हैं। चालानों के माध्यम से कुल 3 करोड़ 57 लाख 8 हजार 700 रुपये का जुमाना लगाया गया है। इसमें से 1 करोड़ 48 लाख 80 हजार 400 रुपये की वसूली हुई है, जबकि 2 करोड़ 8 लाख 28 हजार 300 रुपये की राशि अब भी बकाया है।

अवैध संबंध के शक में युवक पर चाकू से हमला

बिलासपुर। सीपत थाना क्षेत्र के ग्राम मुड़पार में युवक पर जानलेवा हमला करने के मामले में पुलिस ने फरार आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान रमाशंकर सिसार (45 वर्ष), निवासी मुड़पार मौहारपारा, थाना सीपत के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, आरोपी को शक था कि उसकी पत्नी और रितिक कश्यप उर्फ करन के बीच अवैध संबंध हैं। इसी संदेह के चलते वह रितिक से दुश्मनी रखता था। पुलिस ने आरोपी चाकू बरामद कर उसे न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया है।

तालाब में मिली 14 साल के बच्चे की लाश

श्रीकंचनपथ न्यूज

तखतपुर। छत्तीसगढ़ के तखतपुर थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत ठाकुरकापा में शुक्रवार को उस समय सनसनी फैल गई, जब गांव के साव तालाब में 14 वर्षीय नाबालिग बालक का शव तैरता हुआ मिला। मृतक की पहचान देवेंद्र पटेल के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि बालक शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार था तथा घर से लापता हो गया था। परिजन उसकी तलाश कर रहे थे और गुमशुदगी दर्ज कराने तखतपुर थाने पहुंचे थे। इसी दौरान तालाब में शव मिलने की सूचना से परिवार में मातम छा गया।

जानकारी के अनुसार, देवेंद्र पटेल घर से लापता हो गया था। काफी तलाश करने के बाद भी जब उसका कोई सुराग नहीं मिला तो परिजन उसकी गुमशुदगी दर्ज कराने पुलिस थाने पहुंचे। इसी बीच ग्राम

ठाकुरकापा के साव तालाब में एक बालक का शव मिलने की सूचना मिली।

इसके बाद परिजन मौके पर पहुंचे, जहां शव की पहचान देवेंद्र पटेल के रूप में की गई। तालाब में शव मिलने की सूचना पर तखतपुर पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को तालाब से बाहर निकलवाया और आवश्यक कानूनी कार्रवाई की। पंचनामा तैयार करने के बाद शव को मर्चुरी में रखवाया गया है।

तखतपुर थाना प्रभारी सतीश साहू ने बताया कि बालक के परिजन उसकी गुमशुदगी दर्ज कराने थाने पहुंचे थे। इसी दौरान ठाकुरकापा गांव के तालाब में शव मिलने की सूचना मिली। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव की पहचान कराई। परिजनों के अनुसार, बालक शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार था तथा घर से लापता हो गया था। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

2 हजार के विवाद में युवक की हत्या, आरोपी गिरफ्तार

जांजगीर। पामगढ़ थाना क्षेत्र में 2 हजार रुपए की उधारी मांगने को लेकर हुए विवाद में मारपीट के बाद युवक की मौत के मामले में पुलिस ने फरार दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोप है कि उधारी के रुपए मांगने पर अविनाश उर्फमन्नू कुर्र और उसके साथियों का रमेश टंडन उर्फ महेश और उनके बेटे शिवा उर्फभोलेशंकर टंडन से विवाद हुआ। इसके बाद आरोपियों ने मारपीट की। हमले में शिवा के सिर, पैर, पीट और कमर में गंभीर चोटें आई थीं। उसे इलाज के दौरान 30 अप्रस्त को उसकी मौत हो गई। वारदात के बाद धार आरोपियों की तलाश में पुलिस जुटी थी। मुखबिर से सूचना मिलने पर ओमीश कुर्र उर्फसोनू (21) और मन कुर्र (19) को पकड़ा। दोनों को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया।



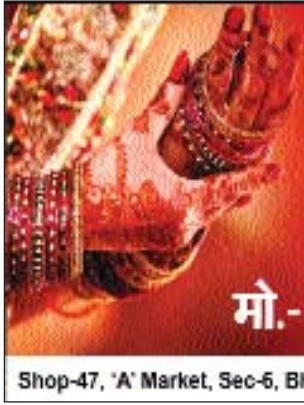
Ashok JEWELLERY

Gifts • Toys • Cosmetics
Perfumes • Sisa Jewellery

Beside Parakh Jewellers,
Aksash Ganga,
Supela, Bhilai

Helllo: 0788-4052727

Mukesh Jain 9009959111
Rishabh Jain 8103831329



मिलाई की सबसे बड़ी चुड़ी की दुकान

निखार बँगल

मो.- 9826186026

Shop-47, 'A' Market, Sec-6, Bhilai Nagar, Distt., Durg (C.G.)



भिलाई मसाला उद्योग

शुद्ध कुटे हुए मसाले, पापड़, अचार, बड़ी, जड़ी-बूटी, जचकी का सामान इत्यादि

128, ए- मार्केट, सेक्टर-6, भिलाई, फोन. 2284508, मो. 9826137766

एक्सपायरी दूध से बन रहा था पनीर, गंदगी में मिठाइयां

2500 किलो मिठाई-दूध नष्ट, 3 दुकानें सीज, बिस्किट पर 9 दिन आगे की डेट

श्रीकंचनपथ न्यूज

भिलाई। छत्तीसगढ़ के भिलाई में फूड डिपार्टमेंट ने शुक्रवार को मिठाई दुकानों पर छापा मारा। टीम ने जांच में पाया कि एक्सपायरी दूध से पनीर बनाया जा रहा था। गंदगी के बीच मिठाइयां बनती मिलीं। फूड डिपार्टमेंट की टीम ने करीब 2500 किलो मिठाई और 1000 लीटर दूध नष्ट कराया है।

3 प्रतिष्ठानों में काम बंद करा दिया गया। वहीं, वैशाली नगर की एक दुकान में बिस्किट के पैकेट पर 9 दिन आगे की तारीख डालकर पैकिंग करने का मामला सामने आया। दुकान संचालक के खिलाफ केस दर्ज करने की कार्रवाई शुरू की गई है।

नंदनी रोड स्थित मां दुर्गा डेयरी की जांच में पनीर और दही गंदी जगह पर बनाते मिले। पनीर बनाने में इस्तेमाल हो रहा पैकड दूध एक्सपायरी डेट का था। टीम ने पनीर, दूध और दही के नमूने लेकर जांच के लिए लैब भेजे। इसके बाद नगर

निगम की मदद से 1000 लीटर दूध और 80 किलो दही नष्ट किया गया।

लड्डुओं में मिलावट की आशंका

कैंप-2 स्थित गुसाजी लड्डु हाउस में करीब 250 किलो मैदे के लड्डु मिले। इनमें तय मानकों के अनुरूप नहीं होने वाले खाद्य रंग और स्वीटनिंग एजेंट के इस्तेमाल का संदेह था। विभाग ने अनियमितता मिलने पर लड्डुओं को नष्ट करने की कार्रवाई की।

प्लास्टिक के जार में बिना लेबल पैक कर रहे थे मिठाइयां

बैकुंठधाम, कैंप-2 स्थित मुस्कान फूड प्रोडक्ट्स में भी गंदगी के बीच मिठाइयां बनाते और पैक करते मिले। यहां लड्डु, सोनपापड़ी, पेड़ा और बर्फी जैसी मिठाइयां बिना लेबल वाले प्लास्टिक के जार में पैक की जा रही थीं।

कार्रवाई के दौरान करीब 200 किलो पेड़ा, 1020 किलो सोनपापड़ी और 70 किलो मसूर पाक समेत अन्य मिठाइयों को नष्ट करने की



प्रक्रिया की गई। विभाग के मुताबिक, तीनों प्रतिष्ठानों में कुल करीब 2500 किलो मिठाई और 1000 लीटर दूध नष्ट करने की कार्रवाई की गई।

जांच में गंभीर गड़बड़ियां मिलने के बाद तीनों प्रतिष्ठानों में खाद्य पदार्थ बनाने का काम

बंद करा दिया गया है। अधिकारियों ने बताया कि फूड लाइसेंस एक सप्ताह के लिए सस्पेंड करने की सिफारिश भेजी जाएगी। इस दौरान जरूरी सुधार नहीं किए गए तो सस्पेंड की अवधि बढ़ाई जा सकती है। वैशाली नगर स्थित जलाराम नमकीन एंड डेयरी में भी टीम ने

औचक जांच की। यहां बिस्किट के पैकेट पर 1 नवंबर 2026 की तारीख डालकर पैकिंग की जा रही थी, जबकि जांच 23 अक्टूबर को हुई। यानी पैकेट पर करीब 9 दिन आगे की तारीख डाली जा रही थी।

विभाग ने इसे ग्राहकों को गुमराह करने का मामला मानते हुए दुकान संचालक के खिलाफ मिसलीडिंग का केस तैयार किया है। मामले को न्यायालय में पेश करने की कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

कमिश्नर बोले- सुरक्षा मानकों की अनदेखी स्वीकार नहीं

खाद्य सुरक्षा विभाग के आयुक्त दीपक अग्रवाल ने बताया कि वे अलग-अलग खाद्य प्रतिष्ठानों में जाकर जांच कर रहे हैं। इसी दौरान दुरां जिले में भी कार्रवाई की गई। उन्होंने कहा कि खाद्य पदार्थ साफ-सुथरी जगह पर बनाए जाने चाहिए। एक्सपायरी सामग्री का इस्तेमाल और खाद्य सुरक्षा नियमों की अनदेखी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

पति पर दुष्कर्म-लूट का केस, बिना जांच किए एफआईआर

एसएसपी रज्जनेश ने दोबारा जांच के लिए निर्देश, पत्नी दो साल से अलग रह रही थी

श्रीकंचनपथ न्यूज

बिलासपुर। बिलासपुर के सिरगिट्टी थाने में पति के खिलाफ दुष्कर्म और लूट का केस दर्ज किया गया है। आरोप है कि, दो साल से पति से अलग रह रही महिला की शिकायत पर एक प्रशिक्षु पीएसआई ने बिना शुरुआती जांच किए ही एफआईआर दर्ज कर ली।

मामला एसएसपी रज्जनेश सिंह तक पहुंचा, जिसके बाद उन्होंने इसे गंभीरता से लिया। उन्होंने सीएसपी परमेश्वर तिलकवार को जांच कर रिपोर्ट देने को कहा है। इसमें लूट के आरोपों की भी नए सिरे से जांच होगी।

पति-पत्नी के बीच विवाद कोर्ट में चल रहा मामला

जानकारी के अनुसार, महिला



अपने पति से अलग मायके में रह रही है। दोनों के बीच का मामला कोर्ट में चल रहा है और फैसला आना बाकी है। महिला ने कथित तौर पर पति को घर बुलाया था।

पति के पहुंचने के बाद महिला थाने पहुंची और उस पर जबरदस्ती संबंध बनाने और रुपए लूटने की शिकायत की। इस शिकायत पर प्रशिक्षु पीएसआई ने मामला दर्ज कर लिया। अब जांच में यह साफ

होगा कि एफआईआर दर्ज करने में नियमों का पालन हुआ या नहीं।

थाना प्रभारी मी हटाए गए

इस बीच जिले के कई थानों के प्रभारी हटाए गए हैं, जिसमें सिरगिट्टी थाना प्रभारी का भी नाम शामिल है। हालांकि, उन्हें इस मामले के चलते हटाए जाने की आधिकारिक तौर पर पुष्टि नहीं हुई है।

हसदेव नदी के पुल से आरक्षक ने लगाई छलांग!

बाइक के पास मिले मोबाइल और आईडी कार्ड, तलाश में जुटी एसडीआरएफ

श्रीकंचनपथ न्यूज

कोरबा। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले से एक सनसनीखेज मामला सामने आया है, जहां कैदई के पास हसदेव नदी के पुल से एक आरक्षक के छलांग लगा दी है। आरक्षक को बाइक पुल पर खड़ी मिली है, जिसके पास मोबाइल, पर्स, पुलिस आईडी कार्ड और आधार कार्ड भी मिला है। घटनास्थल पर मिले सामान के आधार पर आरक्षक के नदी में छलांग लगाने की आशंका जताई जा रही है।

बताया जा रहा है कि आरक्षक की पहचान 31 वर्षीय सुनील बेक के रूप में हुई है। वह सरगुजा जिले के प्रेमनगर थाना क्षेत्र की तारापुर नदी के पुल पर आरक्षक की बाइक खड़ी मिली। बाइक के पास ही



उसका मोबाइल, पर्स, पुलिस आईडी कार्ड और आधार कार्ड भी मिला है। घटनास्थल पर मिले सामान के आधार पर आरक्षक के नदी में छलांग लगाने की आशंका जताई जा रही है।

बताया जा रहा है कि आरक्षक की पहचान 31 वर्षीय सुनील बेक के रूप में हुई है। वह सरगुजा जिले के प्रेमनगर थाना क्षेत्र की तारापुर नदी के पुल पर आरक्षक की बाइक खड़ी मिली। बाइक के पास ही

व्यक्तिगत दस्तावेज मिलने के बाद पुलिस ने संबंधित थाना और चौकी को सूचना दी है।

घटना की जानकारी मिलते ही मोरगा चौकी प्रभारी मंगतू राम पुलिस स्टॉफ के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने घटनास्थल का निरीक्षण किया और पूरे मामले को जानकारी उच्च अधिकारियों को दी। पुलिस ने बाइक के पास मिले दस्तावेजों को जब्त कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

मोरगा चौकी प्रभारी मंगतू राम के अनुसार, पुलिस आईडी कार्ड के आधार पर संबंधित थाना और चौकी को सूचना दे दी गई है। आरक्षक की तलाश के लिए एसडीआरएफ के गोताखोरों की टीम को बुलाया गया है।

नदी में तेज बहाव, तलाशी अभियान में परेशानी

बताया जा रहा है कि हसदेव नदी में पानी का बहाव तेज है। ऐसे में नदी में तलाशी और रेस्क्यू अभियान चलाने में कठिनाई हो रही है। पुलिस और रेस्क्यू टीम आरक्षक की तलाश के लिए आवश्यक कार्रवाई कर रही है। वहीं देर रात होने के कारण खोजबीन सुबह किए जाने की बात सामने आई है।

फिलहाल, आरक्षक ने नदी में छलांग कब और किन परिस्थितियों में लगाई, यह स्पष्ट नहीं हो पाया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और आरक्षक की तलाश जारी है।

दीपांशु साहू हत्याकांड में तीन और आरोपी गिरफ्तार, सात सलाखों के पीछे

श्रीकंचनपथ न्यूज

धमतरी। छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले के ग्राम मुजगहन में हुए चर्चित दीपांशु साहू हत्याकांड में पुलिस को एक और सफलता मिली है। पुरानी रंजिश को लेकर हुए जानलेवा हमले के मामले में पुलिस ने तीन और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इससे मामले में गिरफ्तार आरोपियों की संख्या बढ़कर सात हो गई है। पुलिस ने वारदात में इस्तेमाल किया गया स्टील का स्प्रिंगदार चाकू, बांस का डंडा और खून से सने कपड़े भी बरामद किए हैं। सभी सात आरोपियों को न्यायालय में पेश करने के बाद न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है।

पुरानी रंजिश में दो युवकों पर जानलेवा हमला

पुलिस के अनुसार, 21 अक्टूबर की रात करीब 10:30 बजे अर्जुनी थाना क्षेत्र के ग्राम मुजगहन में पुरानी रंजिश को लेकर हमला हुआ था। आरोप है कि रत्नाबांधा और



पंचवटी कॉलोनी के कुछ युवकों ने सुदामा साहू के घर के सामने मुख्य मार्ग पर दीपांशु साहू और विकास साहू को घेर लिया। इसके बाद आरोपियों ने लाठी-डंडों और धारदार चाकू से दोनों पर हमला कर दिया। हमले में

दीपांशु साहू गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे तत्काल जिला अस्पताल धमतरी ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। वहीं, हमले में घायल विकास साहू का इलाज जारी है।

पहले चार, फिर तीन आरोपी गिरफ्तार

घटना के बाद पुलिस ने आरोपियों की तलाश शुरू की। 22 अक्टूबर को पुलिस ने चार आरोपियों फनेश्वर नेताम, रितेश नेताम, लिलेश्वर नेताम और नोहर यादव उर्फ काला को गिरफ्तार किया था। इसके बाद 23 अक्टूबर को तीन अन्य आरोपियों शंकर नागरची, तामेश्वर नागरची उर्फमोनू और धनेश्वर नागरची को गिरफ्तार किया गया। तीनों आरोपी रत्नाबांधा के निवासी बताए गए हैं।

चाकू, डंडा और खून से सने कपड़े बरामद

पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों के कब्जे से वारदात में इस्तेमाल किया गया स्टील का स्प्रिंगदार चाकू, बांस का डंडा और खून से सने कपड़े बरामद किए हैं।अब तक कुल सात आरोपियों की गिरफ्तारी हो चुकी है। सभी आरोपियों को न्यायालय में पेश किया, उन्हें न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया।

खास खबर



एशियन पैरा गेम्स में छत्तीसगढ़ का स्वर्णिम परचम, तोमन और शीतल ने रचा इतिहास

रायपुर। वित्त मंत्री ओपी चौधरी ने एशियन पैरा गेम्स 2026 में पैरा तीरंदाजी की कंपाउंड मिक्सड टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने पर भारतीय पैरा तीरंदाज शीतल देवी और छत्तीसगढ़ के प्रतिभावान खिलाड़ी तोमन कुमार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। छत्तीसगढ़ के बेटे तोमन कुमार ने शीतल देवी के साथ शानदार तालमेल, सटीक निशानेबाजी और अद्भुत एकाग्रता का परिचय देते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया है। छत्तीसगढ़ के खिलाड़ी का एशियन पैरा गेम्स में स्वर्ण पदक जीतना प्रदेश के खेल जगत के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण उपलब्धि है। वित्त मंत्री श्री चौधरी ने कहा कि तोमन और शीतल की सफलता केवल पदक जीतने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह साहस, आत्मविश्वास और चुनौतियों पर विजय पाने की प्रेरणादायी कहानी भी है। दोनों खिलाड़ियों ने अपनी कड़ी मेहनत, अनुशासन और समर्पण से साबित किया है कि मजबूत इच्छाशक्ति और लक्ष्य के प्रति अटूट विश्वास के बल पर सफलता की नई ऊंचाइयों को छुआ जा सकता है। श्री चौधरी ने कहा कि छत्तीसगढ़ की धरती प्रतिभाओं से समृद्ध है। प्रदेश के युवा खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अपनी उपलब्धियों से छत्तीसगढ़ की पहचान को नई ऊंचाई दे रहे हैं। तोमन कुमार की यह स्वर्णिम सफलता विशेष रूप से प्रदेश के युवा एवं दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगी और उन्हें खेल के क्षेत्र में बड़े सपने देखने तथा उन्हें साकार करने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने ऐतिहासिक बस्तर दशहरा के अंतर्गत आयोजित मुरिया दरबार में आदिवासी समाज की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, परंपरागत सामाजिक व्यवस्था और सामूहिक निर्णय प्रणाली की सराहना करते हुए कहा कि आदिवासी समाज की परंपरागत व्यवस्था सामाजिक एकता, न्याय, आपसी सहयोग और सुशासन का उत्कृष्ट उदाहरण है।

उन्होंने कहा कि समय के साथ शासन व्यवस्था, नीतियां और कानून बदलते रहते हैं, लेकिन आदिवासी समाज ने अपनी परंपराओं, सामाजिक नियमों और अलिखित संविधान को पीढ़ियों से जीवित रखा है। यह व्यवस्था समाज में सुख-शांति, प्रेम, सद्भाव और सामूहिकता बनाए रखने का महत्वपूर्ण आधार है। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि मैं भी इसी आदिवासी संस्कृति और परंपरा से आती हूँ। मेरे दादाजी मांझी थे, मेरे पिताजी भी मांझी थे और मेरे भाई भी मांझी हुआ करते थे। मैं एक मांझी की बेटी हूँ, गांव के मुखिया की बेटी हूँ। उन्होंने कहा कि उनके परिवार के सदस्य आज भले ही उनके बीच नहीं हैं, लेकिन अपनी संस्कृति, सामाजिक व्यवस्था और परंपराओं के प्रति उनका जुड़ाव आज भी उतना ही गहरा है। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने कहा कि देश में पहले



राजाओं का शासन था, इसके बाद अंग्रेजों का शासन आया और आज भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था है। समय के साथ शासन व्यवस्था और कानूनों में परिवर्तन हुआ है, लेकिन आदिवासी समाज की अपनी पारंपरिक व्यवस्था आज भी विद्यमान है जो किसी पुस्तक में नहीं लिखा गया है, लेकिन समाज के लोग

पीड़ परगना और देश परगना की व्यवस्था

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने आदिवासी समाज की पारंपरिक न्याय व्यवस्था का उल्लेख करते हुए कहा कि गांवों में मांझी और अन्य पारंपरिक प्रमुखों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। परिवारों के बीच विवाद, जमीन-जायदाद से संबंधित समस्याएं अथवा आपसी मतभेद होने पर लोग मांझी के पास जाते हैं। मांझी गांव के लोगों को एकत्रित कर सभी पक्षों की बात सुनते हैं और आपसी सहमति से समस्याओं का समाधान करने का प्रयास करते हैं। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज में गांव के प्रमुख व्यक्तियों और बुजुर्गों की सहभागिता से सामूहिक निर्णय लेने की समृद्ध परंपरा रही है। इस व्यवस्था में पीड़ परगना और देश परगना जैसी पारंपरिक संस्थाओं का भी विशेष महत्व रहा है। गांव स्तर पर समाधान नहीं होने पर समस्याओं को पीड़ परगना और आवश्यकता पड़ने पर देश परगना के समक्ष रखा जाता था। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि पहले लगभग 50 से 52 गांवों को मिलाकर एक पीड़ की व्यवस्था हुआ करती थी। बड़ी समस्याओं के समाधान के लिए समाज के लोग कई दिनों तक सामूहिक बैठकें करते थे। कभी-कभी सात से आठ दिनों तक लगातार विचार-विमर्श चलता था और समाधान निकलने तक प्रयास जारी रहते थे। यह परंपरा आदिवासी समाज की एकता, सामूहिक जिम्मेदारी और आपसी विश्वास को दर्शाती है।

पीढ़ियों से इसका पालन करते आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज में लोग मिल-जुलकर पूजा-अर्चना करते हैं, विवाह एवं अन्य सामाजिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं तथा सामूहिक रूप से पर्व-त्यौहार मनाते हैं। नृत्य, गीत-संगीत और सामूहिक उत्सवों के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखते हैं। उन्होंने इस समृद्ध विरासत को संरक्षित रखने के लिए समाज के लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रपति ने कहा कि आधुनिक न्यायिक व्यवस्था में समस्याओं के समाधान के लिए पुलिस, थाना और न्यायालयों का सहारा लिया जाता है। कई मामलों में न्याय प्राप्त करने की प्रक्रिया लंबी हो जाती है और इसमें समय तथा धन दोनों खर्च होते हैं। उन्होंने कहा कि कुछ विवादों के समाधान में दस-बीस या तीस वर्ष तक लग जाते हैं। उन्होंने आग्रह किया कि जहां संभव हो और कानून के अनुरूप हो, वहां समाज के लोग आपसी बातचीत, सहमति और पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था के माध्यम से विवादों का समाधान करने का प्रयास करें।

राष्ट्रपति ने कहा कि लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में कार्यपालिका, न्यायपालिका और

विधायिका के अलग-अलग दायित्व हैं, जबकि आदिवासी समाज की पारंपरिक व्यवस्था में मांझी सामाजिक नेतृत्व, विवाद समाधान और सामुदायिक निर्णयों से जुड़ी अनेक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं।

राष्ट्रपति ने कहा कि आदिवासी समाज की संस्कृति में आध्यात्मिकता, सामूहिकता और

मुरिया दरबार की परंपरा को जीवित रखने का आह्वान

राष्ट्रपति ने मुरिया दरबार जैसी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित रखने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि समाज की पहचान उसकी संस्कृति, परंपराओं और सामूहिक मूल्यों से होती है। चाहे इन परंपराओं का उल्लेख सरकारी अभिलेखों में हो अथवा न हो, समाज के लोगों को अपनी सामाजिक संस्थाओं और सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज की परंपरागत व्यवस्था में आपसी भाईचारा, प्रेम, सद्भाव, सामाजिक न्याय और सुशासन की भावना निहित है। इन मूल्यों को बनाए रखना वर्तमान और भावी पीढ़ियों की सामूहिक जिम्मेदारी है। अपने संबोधन के अंत में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने बस्तर के आदिवासी समाज से मिले सेंट, सम्मान और आत्मीय स्वागत के लिए हृदय से आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आप सभी के बीच आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई है। अपनी संस्कृति और परंपराओं के प्रति आपका समर्पण प्रेरणादायक है। इस दौरान राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, राज्यपाल श्री रेवन डेका और मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय को स्मृति चिह्न भेंट किया गया। संस्कृति, परंपरा, संविधान और लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का मूल उद्देश्य समाज में सुख-शांति, आनंद और प्रेम बनाए रखना है। इस दृष्टि से आदिवासी समाज की पारंपरिक व्यवस्था अत्यंत सुंदर और उत्कृष्ट है।

माँ दंतेश्वरी की पूजा कर राष्ट्रपति ने देशवासियों की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने अपने बस्तर प्रवास के दौरान जगदलपुर स्थित बस्तर की आराध्य देवी माँ दंतेश्वरी के मंदिर पहुंचकर विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। राष्ट्रपति ने माँ दंतेश्वरी से देशवासियों की सुख-समृद्धि, खुशहाली और मंगलमय जीवन की कामना की। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने मंदिर में माँ दंतेश्वरी के दर्शन किए और श्रद्धापूर्वक पूजा-अर्चना की। मंदिर परिसर में राष्ट्रपति का परंपरागत ढंग से स्वागत किया गया।

इस अवसर पर राज्यपाल रमेन डेका और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने माँ दंतेश्वरी के दर्शन कर प्रदेशवासियों की सुख-शांति, समृद्धि और निरंतर प्रगति की



कामना की। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि बस्तर की आराध्य देवी माँ दंतेश्वरी के प्रति अंचल के लोगों की अटूट श्रद्धा है। माँ दंतेश्वरी बस्तर की आस्था और लोकजीवन का अभिन्न हिस्सा हैं।

राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी का माँ दंतेश्वरी के दर्शन-पूजन के लिए आगमन बस्तर और पूरे छत्तीसगढ़ के लिए गौरव का अवसर है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि बस्तर अपनी अनुपम जनजातीय

संस्कृति, प्राचीन परंपराओं और विशिष्ट जीवन मूल्यों के लिए देश-दुनिया में अलग पहचान रखता है। यहाँ की परंपराओं में प्रकृति, आस्था और समाज के बीच गहरा संबंध दिखाई देता है। राष्ट्रपति जी के प्रवास से बस्तर की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं को राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान और सम्मान मिलेगा।

उल्लेखनीय है कि माँ दंतेश्वरी बस्तर अंचल की आराध्य देवी हैं। माँ दंतेश्वरी के प्रति बस्तरवासियों की गहरी आस्था है और उनकी उपासना क्षेत्र की धार्मिक-सांस्कृतिक परंपरा में विशेष स्थान रखती है। माँ दंतेश्वरी से जुड़ी आस्था बस्तर की सदियों पुरानी परंपराओं और यहां के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में गहराई से रची-बसी है।

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। जीवन की अंतिम यात्रा के बाद भी किसी के लिए नई रोशनी की उम्मीद बन जाना मानवता की अनमोल मिसाल है। छत्तीसगढ़ के मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले के ग्राम विजयपुर निवासी 23 वर्षीय स्वर्गीय यश गुप्ता के परिजनों ने इसी भावना को साकार किया है।

युवा अवस्था में यश के असामयिक निधन से परिवार पर दुर्घों का पहाड़ टूट पड़ा, लेकिन इस कठिन चढ़ी में भी परिजनों ने नेत्रदान का निर्णय लेकर मानव सेवा का प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया। जिले में यह दूसरा नेत्रदान है, जो समाज में अंगदान और नेत्रदान के प्रति बढ़ती



जागरूकता का सकारात्मक संदेश देता है।

ग्राम विजयपुर निवासी स्वर्गीय यश गुप्ता, पिता स्वर्गीय अरविन्द गुप्ता के निधन के बाद उनके

श्रीकंचनपथ समाचार

परिजनों ने 22 अक्टूबर को नेत्रदान की सहमति दी। नेत्रदान की प्रक्रिया प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र गोटाटोला एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मोहला

के सहयोग से संपन्न हुई। राजनांदगांव जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. नेतराम नवरवे, जिला सहायक नोडल अधिकारी सुनील कुमार वर्मा एवं सुदेश कुमार रामटेकर तथा मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. विजय खोबरागढ़े और जिला अंधत्व नोडल अधिकारी डॉ. आर.आर. धुर्वे के मार्गदर्शन में यह प्रक्रिया पूरी की गई। खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ. देवेश जाधवर की निगरानी में मेडिकल कॉलेज पेंड्री, राजनांदगांव की नेत्रदान टीम ने प्रक्रिया संपन्न कराई। टीम में डॉ. शिवानी, डॉ. जयंत, डॉ. पवन एवं नेत्र सहायक अधिकारी संजीव कुमार यादव शामिल रहे।

बल्क परचेस नीति से बड़ी आवासों की मांग, 226 बिके

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा आवासीय योजनाओं को अधिक प्रभावी, व्यावहारिक और जनहितैषी बनाने के लिए लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों के सकारात्मक परिणाम सामने आने लगे हैं। राज्य शासन द्वारा छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल के लंबे समय से रिक आवासों के विक्रय के लिए बल्क परचेस की अनुमति दिए जाने से प्रदेश में आवासीय संपत्तियों के विक्रय को नई गति मिली है। इस निर्णय के फलस्वरूप विभिन्न शासकीय एवं निजी संस्थाओं द्वारा अपने कर्मचारियों को आवासीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बड़ी संख्या में मकानों की खरीदो की जा रही है।

वित्त एवं आवास एवं पर्यावरण मंत्री ओपी चौधरी के मार्गदर्शन में मंडल द्वारा निर्मित आवासों के बेहतर उपयोग, रिक संपत्तियों के विक्रय और आवासीय परिसरों में बसाहट बढ़ाने की दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। बल्क परचेस की व्यवस्था से जहां लंबे समय से खाली पड़े भवनों का उपयोग सुनिश्चित हो रहा है, वहीं मंडल को राजस्व प्राप्त होने के साथ आवासीय परिसरों



में नागरिक सुविधाओं और रखरखाव की व्यवस्था को भी मजबूती मिलने की संभावना है। छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल द्वारा संचालित विभिन्न आवासीय योजनाओं के अंतर्गत अब तक दुर्ग, जगदलपुर, बिलासपुर, रायगढ़, नवा रायपुर अटल नगर एवं आरंग में संस्थागत खरीदो के माध्यम से कुल 226 आवासों का विक्रय किया गया है। इन आवासों का कुल मूल्य लगभग 42.17 करोड़ रुपये है।

जीएसटी विभाग द्वारा प्रदेश के चार प्रमुख शहरों में कुल 68 आवासों का क्रय

किया गया है, जिनका कुल मूल्य लगभग 23.77 करोड़ रुपये है। इनमें दुर्ग में 24 मकान लगभग 6.50 करोड़ रुपये, जगदलपुर में 16 मकान लगभग 6 करोड़ रुपये, बिलासपुर में 25 मकान लगभग 10.35 करोड़ रुपये तथा रायगढ़ में 3 मकान लगभग 92 लाख रुपये की राशि से खरीदे गए हैं। इसी प्रकार नवा रायपुर अटल नगर में प्रधानमंत्री सह मुख्यमंत्री आवास योजना के अंतर्गत मेफेयर संस्था द्वारा 128 मकानों का लगभग 16.20 करोड़ रुपये में क्रय किया गया है। वहीं मैट्स विश्वविद्यालय द्वारा आरंग में 30 मकान लगभग 2.20 करोड़

रुपये की राशि से खरीदे गए हैं।

इसके अतिरिक्त नवा रायपुर अटल नगर में विज्ञान एवं आयुष विश्वविद्यालय द्वारा भी 128 फ्लैट्स की बल्क खरीदो का निर्णय लिया गया है। इन फ्लैट्स का अनुमानित कुल मूल्य लगभग 16.20 करोड़ रुपये है। इस प्रस्तावित खरीदो के पूर्ण होने पर संस्थागत आवास विक्रय का आंकड़ा और बढ़ेगा।

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल द्वारा नवा रायपुर अटल नगर के सेक्टर- 16, 30 एवं 34 में प्रधानमंत्री सह-मुख्यमंत्री आवास योजना के अंतर्गत आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग तथा निम्न आय वर्ग के लिए बड़ी संख्या में आवासों का निर्माण किया गया है। योजना के प्रथम चरण में कुल 6,296 भवनों का क्रियाव्ययन किया गया था। इन आवासों के विक्रय के लिए समय-समय पर विज्ञापन जारी किए जाने के बावजूद कुछ भवन लंबे समय तक अविक्रित रहे। इसके कारण भवनों की सुरक्षा, रखरखाव तथा मंडल के वित्तीय संसाधनों के प्रबंधन से संबंधित चुनौतियां सामने आ रही थीं। मंत्रिपरिषद ने अविक्रित आवासों को पात्र हितग्राहियों के अन्य आय वर्ग के व्यक्तियों एवं संस्थाओं को भी विक्रय करने की अनुमति प्रदान कर दी।

छत्तीसगढ़ हॉकी लीग का जियो-हॉटस्टार पर लाइव प्रसारण, पूरी दुनिया देख रही

श्रीकंचनपथ समाचार

रायपुर। छत्तीसगढ़ हॉकी लीग के सभी मुकाबलों का जियो हॉटस्टार पर सीधा प्रसारण किया जा रहा है। इससे छत्तीसगढ़ के साथ देश-दुनिया के दर्शकों भी यहां खेले जा रहे मुकाबलों का आनंद ले सकते हैं। सरदार वल्लभ भाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हॉकी स्टेडियम में 21 अक्टूबर से शुरू हुई लीग 1 नवम्बर तक चलेगी।

लीग के ब्रांड एम्बेसडर भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान, ओलंपियन और दिग्गज खिलाड़ी सरदार सिंह खिलाड़ियों को उत्साहवर्धन कर रहे हैं। लीग में ओलंपियन खिलाड़ियों की भागीदारी और उनके नेतृत्व में टीमों के बीच हो रहे मुकाबलों ने प्रतियोगिता को विशेष आकर्षण दिया है।

ओलंपियन सुरेन्द्र सिंह की कप्तानी वाली न्यायधानी नाइट्स ने पहले दिन ओलंपियन ललित उपाध्याय की राजधानी रॉयल्स को



2-1 से हराकर शानदार जीत दर्ज की। इस मुकाबले में केतन कुशवाहा को 'स्ट्राइकर ऑफ द मैच' और 'प्लेयर ऑफ द मैच' चुना गया। पहले दिन 22 अक्टूबर को महिला हॉकी खिलाड़ियों का प्रदर्शनी मुकाबला भी खेला गया।

इंद्रावती टाइग्रेस ने महानदी फाल्कन्स को एकतरफा 4-1 से पराजित किया।

25 अक्टूबर को शाम 5:30 बजे न्यायधानी नाइट्स और

बैलाडीला बुल्स के बीच, 26 को शाम 5:30 बजे संस्कारधानी स्ट्राइकर्स और बैलाडीला बुल्स के बीच तथा शाम 7:30 बजे चक्रधर चैम्पियन्स और मैनपाट टाइटन्स के बीच भिड़ंत होगी। 27 अक्टूबर को 5:30 बजे न्यायधानी नाइट्स का मुकाबला चक्रधर चैम्पियन्स तथा 7:30 बजे राजधानी रॉयल्स का मुकाबला संस्कारधानी स्ट्राइकर्स से होगा। 28 को 5:30 बजे न्यायधानी नाइट्स और मैनपाट टाइटन्स तथा 7:30 बजे राजधानी रॉयल्स और बैलाडीला बुल्स भिड़ेंगे। 29 अक्टूबर को 5:30 बजे संस्कारधानी स्ट्राइकर्स और मैनपाट टाइटन्स तथा 7:30 बजे चक्रधर चैम्पियन्स और बैलाडीला बुल्स के बीच मुकाबले खेले जाएंगे।

31 अक्टूबर को चार टीमों के बीच सेमीफाइनल खेले जाएंगे। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर 1 नवम्बर को शाम 5:30 बजे लीग का फाइनल मुकाबला खेला जाएगा।